



सं. 131

अक्तूबर - दिसंबर 2011

ISSN 0972-2386

# कडलमीन

सी एम एफ आर आइ समाचार

<http://www.cmfri.org.in>

## INSIDE

9वीं इंडियन फिशरीस फोरम	3
अनुसंधान मुख्य अंश	18
घटनाएं	24
प्रशिक्षण कार्यक्रम	25
राजभाषा कार्यान्वयन	26
सी एम एफ आर आइ के अद्यतन प्रकाशन	28
कार्यक्रम में सहभागिता	29
कार्मिक समाचार	30



सी एम एफ आर आइ चेन्नई में  
9वीं इंडियन फिशरीस फोरम  
का आयोजन



हर कदम, हर डगर  
किसानों का हमसफर  
भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद

*Agrisearch with a human touch*



केंद्रीय समुद्री मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान  
पी.बी.सं.1603, एरणाकुलम नोर्ट पी.ओ. कोचीन - 682 018



कडलमीन

കടൽമീൻ

கடல்மீன்

ಕಡಲ್‌ಮೀನ್

ಕಡಲ್‌ಮೀನ್

കടൽമീൻ

कडलमीन

कडलमीन

## प्रकाशक

डॉ. जी. सैदा रावु

निदेशक

केंद्रीय समुद्री मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान  
पोस्ट बॉक्स सं.1603, एरणाकुलम नोर्ट पी.ओ.

कोचीन - 682 018, केरल, भारत

दूरभाष: 0484-2394867

फैक्स: 91-484-2394909

ई-मेल: mdcmfri@md2.vsnl.net.in

वेबसाइट: www.cmfri.org.in

## संपादकीय मंडल

डॉ. आर. सत्यदास, अध्यक्ष

डॉ. आर. नारायणकुमार

डॉ. सी. रामचन्द्रन

जे. नारायणस्वामी

## संपादक

वी. एड्विन जोसफ

## सचिवीय सहायता

पी. आर. अभिलाष

## हिंदी अनुवाद

ई. के. उमा

## सी एम एफ आर आइ के बारे में

भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद के अधीन स्थापित केंद्रीय समुद्री मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान, कोचीन समुद्री मात्स्यिकी और समुद्र कृषि में अनुसंधान और प्रशिक्षण के लिए समर्पित सर्वप्रमुख अनुसंधान संस्थान है।

सी एम एफ आर आइ के तीन क्षेत्रीय केंद्र याने कि मंडपम कैप, विशाखपट्टणम और वेरावल तथा सात अनुसंधान केंद्र भारत की तट रेखा में कार्यरत हैं जो देश के समुद्रवर्ती राज्यों को समुद्री मात्स्यिकी नीति का अनुपालन करने में सहायता प्रदान करते हैं।



## निदेशक कहते हैं

प्रिय सहकर्मियो

“सब को संतोष, सौभाग्य, शांति और समृद्धिपूर्ण नव वर्ष 2012 की शुभकामनाएं आदा करता हूँ।”

चेन्नई में 19-23 दिसंबर, 2011 के दौरान आयोजित 9वीं आइ आइ एफ की सफलतापूर्ण समाप्ति के साथ साथ वर्ष

2011 का भी शुभांत हुआ। आप सब लोगों की अर्पणशीलता और कठिन प्रयास से 9 वीं आइ आइ एफ का सफल आयोजन हो पाया। इस के लिए मैं सब का अभिनन्दन करना चाहता हूँ।

आगे हमारे सामने समृद्धिपूर्ण और चूनौतिपूर्ण नव वर्ष है। अब तक प्राप्त उपलब्धियों का समाकलन करना है और अप्रैल 2012 से शुरू होने वाली XII वीं पंच वर्षीय योजना में नई परियोजनाओं और योजनाओं के कार्यान्वयन के लिए हमें तैयार होना भी है। पहले ही हम ने XII वीं योजना में प्रस्तुत करने वाले प्रणोद कार्यों की पहचान करके कार्य योजना रूपाइत की है। हमारे लक्ष्यों की प्राप्ति के लिए उन योजनाओं का कार्यान्वयन अति सावधानी और क्रमिक रूप से किया जाना चाहिए।

आगामी XII वीं योजना की अच्छी शुरुआत के लिए अर्पणशील प्रयासों से हम संयुक्त रूप से काम करेंगे।

एक बार फिर सब को “संतोष, सौभाग्य, शांति और समृद्धिपूर्ण नव वर्ष 2012 की शुभकामनाएं।”

सादर,

डॉ. जी. सैदा रावु  
निदेशक

प्रथम आवरण चित्र: डॉ. एम.वी. गुप्ता, विश्व खाद्य पुरस्कार विजेता दीप प्रज्वलित करते हुए 9 वीं इंडियन फिशरीस फोरम का उद्घाटन करने का दृश्य





## सी एम एफ आर आइ द्वारा चेन्नई में 9 वीं इंडियन फिशरीस फोरम का आयोजन

19 - 23 दिसंबर 2011

‘मात्स्यिकी में नवजागरण - प्रत्याशा एवं रणनीतियाँ’ विषय पर अयोजित पांच दिवस के राष्ट्रीय त्रिवर्षीय सम्मेलन में पूरे देश के विभिन्न अनुसंधान संस्थानों, विश्वविद्यालयों, मात्स्यिकी से जुड़े हुए उद्योगों और गैर सरकारी संगठनों से मात्स्यिकी क्षेत्र में कार्यरत लगभग 1000 विशेषज्ञों ने भाग लिया। डॉ.एम.वी. गुप्ता, विश्व खाद्य पुरस्कार विजेता ने केंद्रीय समुद्री मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान (सी एम एफ आर आइ) के नेतृत्व और एशियन फिशरीस सोसाइटी (ए एफ एस) के सहयोग से दिनांक 19 दिसंबर, 2011 को इमेज ओडिटोरियम, चेन्नई में 9 वीं इंडियन फिशरीस फोरम का उद्घाटन किया।

“भारत की खाद्य सुरक्षा में मात्स्यिकी का नूतन एवं सक्रिय संबंध”  
डॉ.एम.वी. गुप्ता, विश्व खाद्य पुरस्कार विजेता

जलकृषि की टिकाऊ गहनता लाने और प्रग्रहण मात्स्यिकी में शास्त्रीय शासन व्यवस्था के कार्यान्वयन पर ध्यान देते हुए भारतीय मात्स्यिकी सेक्टर में नवजागरण लाने के लिए उन्होंने जुड़वां रास्ता की रूपरेखा दी। उन्होंने यह भी सूचित किया कि राज्य स्तरीय वितरण तंत्र और

भी सक्षम बनाने के लिए सरकार के पक्ष से ज्यादातर ध्यान देना आवश्यक है।

डॉ. बी. मीनाकुमारी, उप महा निदेशक (मात्स्यिकी), भा कृ अनु प ने अपने भाषण में यह सूचित किया कि मात्स्यिकी उत्पादन में मांग पूर्ति में होने वाला विलंब कम करने के लिए 12 वीं योजना में लक्षित मात्स्यिकी सेक्टर के विकास की ओर प्राथमिकता दी जानी चाहिए। वर्तमान मछली उत्पादन का स्तर 8 मिलियन टन की अपेक्षा वर्ष 2012 में मछली उत्पादन 12 मिलियन टन तक बढ़ाया जाना आवश्यक है। इस के लिए समेकित और मांग पर आधारित अनुसंधान और विकास का अभिगम आवश्यक है।

डॉ. बालकृष्ण पिशुपति, अध्यक्ष, राष्ट्रीय जैवविविधता प्राधिकरण ने अपने बधाई भाषण में जैवविविधता सुरक्षा के लिए आइ पी सी सी प्लेटफॉर्म जैसे धरातल की आवश्यकता पर जोर दिया और परिरक्षण एवं प्रबंधन उपाय के



डॉ. बी. मीनाकुमारी, उप महा निदेशक (मा.), भा कृ अनु प



डॉ. डेरेक स्टेपिल्स, अध्यक्ष, ए एफ एस





डॉ. मोहन जोसफ मोडयिल, अध्यक्ष, ए एफ एस आइ बी एवं सदस्य, ए एस आर बी



डॉ. जी. सैदा रावु, आयोजक 9 वीं आइ एफ एफ एवं निदेशक, सी एम एफ आर आइ



डॉ. अम्बेकर ई. एकनाथ महानिदेशक, एन ए सी ए



डॉ. बालकृष्ण पिशुपति, अध्यक्ष, एन बी ए

## सारांश की पुस्तक और स्मारिका का विमोचन



डॉ. मोहन जोसफ मोडयिल सारांश की पुस्तक का विमोचन करते हुए

रूप में भारत की अनन्य आर्थिक मेखला में समुद्री संरक्षित क्षेत्र बढ़ाए जाने की आवश्यकता पर प्रकाश डाला।

डॉ. अम्बेकर ई. एकनाथ, महानिदेशक, नेटवर्क ऑफ अक्वाकल्चर सेन्टर्स इन एशिया - पसफिक (एन ए सी ए), बैंकोक, थायलैण्ड ने यह व्यक्त किया कि भारत में मात्स्यिकी शिक्षा के क्षेत्र में उत्तरदायित्वपूर्ण और योग्यता युक्त नेताओं की आवश्यकता है, जिनके बिना भविष्य में नवजागरण असाध्य है।

डॉ. डेरेक स्टेपिल्स, अध्यक्ष, ए एफ एस ने वैज्ञानिकों और पणधारियों के बीच अब होने वाले संसूचना की दूरी कम करने के पुल का काम करने के लिए इंडियन फिशरीस फोरम से आह्वान किया। जलकृषि में भौगोलिक उत्पादन का 90% एशियन क्षेत्रों का योगदान होने पर भी इस कि पर्याप्त मान्यता नहीं दी जाती है। एशियन फिशरीस सोसाइटी एशिया - पसफिक फिश वॉच कार्यक्रम की शुरुआत से इस कमी को दूर करने का प्रयास किया जा रहा है।

इस अवसर पर कई विशेषज्ञों का आदर सम्मान किया गया। डॉ. जी. सैदा रावु, डॉ. जे.के. जेना, डॉ. श्रीनिवास गोपाल, डॉ. सन्जीवन और डॉ. एकनाथ को डॉ. एस.एन द्विवेदी ने ए एस ई टी फेलोशिप से सम्मानित किया।

डॉ. मोहन जोसफ मोडयिल, अध्यक्ष, ए

एस आर बी, डॉ. ई. विवेकानन्दन, सह आयोजक, 9 वीं आइ एफ एफ और डॉ. जी.सैदा रावु, आयोजक, 9 वीं आइ एफ एफ एवं निदेशक, सी एम एफ आर आइ ने इस अवसर पर भाषण दिए। सम्मेलन के दौरान मात्स्यिकी सेक्टर में हाल ही में हुए प्रौद्योगिकीय और उद्यमिता के विकासों पर प्रकाश डालने वाली प्रदर्शनी भी अयोजित की गयी।

इस अवसर पर सारांश पुस्तक और 9 वीं आइ एफ एफ स्मारिका का विमोचन किया गया।

फोरम में करीब 550 प्रतिनिधियों ने पंजीकरण किया और प्रस्तुतीकरण के लिए लगभग 672 सारांश (443 मौखिक और 229 पोस्टर) प्राप्त हुए। निम्नलिखित मुख्य विषयों पर प्रस्तुतीकरण का वर्गीकरण किया गया: मात्स्यिकी संपदा प्रबंधन (एफ आर), जलकृषि उत्पादन (ए पी), आनुवंशिकी, प्रजनन और जैवप्रौद्योगिकी (जी बी), पर्यावरणीय संघात एवं जलजीव स्वास्थ्य (ई पच), पौष्टिकता और मछली स्वास्थ्य (एल एच), संग्रहण एवं संग्रहण - उपरांत्र प्रौद्योगिकी (एच पी), समाज - आर्थिकता, विपणन एवं आजीविका (एस ई), मछली एवं मछली से जुड़ी हुई जैवविविधता (बी डी), जलवायु परिवर्तन और प्राकृतिक आपदा प्रबंधन (सी सी) और मात्स्यिकी विपणन, नीति एवं शासन (एफ टी)।



## डॉ.एस. एन. द्विवेदी ए एस ई टी फेलोशिप पुरस्कार



डॉ.जी. सैदा रावु, निदेशक डॉ. एस. एन. द्विवेदी से पुरस्कार स्वीकार करते हुए



डॉ. अम्बेकर ई. एकनाथ फेलोशिप स्वीकार करते हुए



डॉ. टी. के. श्रीनिवास गोपाल, निदेशक सी आइ एफ टी फेलोशिप स्वीकार करते हुए



डॉ. जे. के. जेना, निदेशक, एन बी एफ जी आर फेलोशिप स्वीकार करते हुए



प्रतिनिधियों का दृश्य



## डॉ. टी. वी. आर. पिल्लै जलकृषि पुरस्कार



डॉ. सुनिल के. मोहम्मद डॉ. मीनाकुमारी से पुरस्कार स्वीकार करते हुए



डॉ. जे. के. जेना डॉ. बालकृष्ण पिशुपति से पुरस्कार स्वीकार करते हुए

### निम्नलिखित पुरस्कार प्रदान किए गए

पुरस्कार	विजेता गण
डॉ. टी. वी. आर. पिल्लै पुरस्कार	1. डॉ. सुनिल के. मोहम्मद और टीम केंद्रीय समुद्री मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान, कोचीन
प्रोफसर एच. पी. सी. षेट्टी पुरस्कार	2. डॉ. जे. के. जेना केंद्रीय मीठा पानी जलकृषि संस्थान, भुवनेश्वर, उड़ीसा / अब एन बी एफ जी आर, लखनऊ
मात्स्यिकी संसूचना में उत्कृष्ट कार्य के लिए प्रथम श्री जे.वी.एच. दीक्षितुलू राष्ट्रीय पुरस्कार	डॉ. पी. के. साहु केंद्रीय मीठा पानी जलकृषि संस्थान भुवनेश्वर, उड़ीसा
डॉ. टी. जे. पांडियन - ए.जे.माटी पुरस्कार	श्री वी. एड्विन जोसफ केंद्रीय समुद्री मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान, कोचीन
ए एफ एस (कॉलालमपुर) पुरस्कार	डॉ. रेखादेवी चक्रवर्ती केंद्रीय समुद्री मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान, कोचीन
लाइफटाइम उपलब्धि पुरस्कार	डॉ. जे. वी. एच. दीक्षितुलू मुख्य संपादक एवं प्रकाशक, फिशिंग चाइम्स, विशाखपट्टणम
ए एफ एस मेरिट पुरस्कार	डॉ. ए. गोपालकृष्णन राष्ट्रीय मत्स्य आनुवंशिकी संसाधन ब्यूरो, कोच्ची एकक, कोचीन



डॉ. पी. के. साहु डॉ. अम्बेकर ई. एकनाथ से प्रोफसर एच.पी.सी. षेट्टी पुरस्कार स्वीकार करते हुए



## उत्कृष्ट कार्य के लिए श्री जे.वी.एच. दीक्षितुलू राष्ट्रीय पुरस्कार

असोसिएशन ऑफ अक्वाकल्चरिस्ट्स (केंद्रीय मीठा पानी जलकृषि संस्थान, भुवनेश्वर में केंद्रित), मराइन बायोलॉजिकल असोसिएशन ऑफ इंडिया (एम बी ए आइ - केंद्रीय समुद्री मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान, कोच्ची में केंद्रित) और इनलैण्ड फिशरीस सोसाइटी ऑफ इंडिया (आइ एफ एस आइ - केंद्रीय अंतःस्थलीय मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान, बैरकपुर में केंद्रित) ने संयुक्त रूप से वर्ष 2010 में, भारत में मात्स्यिकी विकास/संसूचना के क्षेत्र में उत्कृष्ट योगदान के लिए श्री. जे.वी.एच. दीक्षितुलू राष्ट्रीय पुरस्कार शुरू किया है। ए एफ एस आइ बी द्वारा त्रिवर्षीय इंडियन फिशरीस फोरम के आयोजन के दौरान यह पुरस्कार दिया जाता है।



श्री एड्विन जोसफ मात्स्यिकी संसूचना में उत्कृष्ट कार्य का प्रथम श्री जे.वी.एच. दीक्षितुलू राष्ट्रीय पुरस्कार श्री दीक्षितुलू से स्वीकार करते हुए

प्रथम राष्ट्रीय पुरस्कार चेन्नई में आयोजित 9 वीं इंडियन फिशरीस फोरम के दौरान श्री जे.वी.एच. दीक्षितुलू द्वारा श्री वी. एड्विन जोसफ, प्रभारी अधिकारी, पुस्तकालय एवं

प्रलेख एवं पुस्तकालय अध्यक्ष, सी एम एफ आर आइ को प्रदान किया गया। पुरस्कार में स्मृति चिह्न, प्रशस्ति पत्र और 15,000/- रुपए सम्मिलित हैं।



श्री जे.वी.एच. दीक्षितुलू डॉ. मोहन जोसफ मोडियल से ए एफ एस (कॉलालमपुर) लाइफटाइम एचीवमेंट अवार्ड स्वीकार करने का दृश्य

डॉ. रेखादेवी चक्रवर्ती डॉ. बालकृष्ण पिशुपति से डॉ. टी.जे. पांडियन - ए.जे. माटी पुरस्कार स्वीकार करती हुई







डॉ. ए. गोपालकृष्णन डॉ. मोहन जोसफ मोडियल की उपस्थिति में डॉ. डेरेक स्टेपिल्स से ए एफ एस मेरिट अवार्ड ग्रहण करते हुए

## तकनीकी सत्र

सम्मेलन में 20-23 दिसंबर, 2011 के दौरान समांतर सत्रों में अनुसंधान लेखों का प्रस्तुतीकरण किया गया। तकनीकी सत्रों का विवरण नीचे दिया जाता है:

क्र.सं.	तकनीकी सत्र	अध्यक्ष	सह अध्यक्ष	सारांशों की संख्या स्वीकृत	प्रस्तुत
1.	मात्स्यिकी संपदा प्रबंधन (एफ आर)				
	सत्र 1	डॉ.ए.पी. शर्मा	डॉ.पी.यू.सकरिया		
	सत्र 2	डॉ.पी.एस.बी.आर. जेम्स	डॉ.टी.वी. सत्यानन्दन	57	39
	सत्र 3	डॉ.सुधाकर राव	डॉ. ई.वी. राधाकृष्णन		
	सत्र 4	डॉ.के.के. वास	डॉ.प्रतिभा रोहित		
2.	जलकृषि उत्पादन (ए पी)				
	सत्र 1	डॉ. जे.के. जेना	डॉ.ए.आर. तिरुनावुक्करशु		
	सत्र 2	डॉ.दिलीप कुमार	डॉ.ग्रेस मात्यू	40	16
	सत्र 3	डॉ.ए.जी. पोन्नय्या	डॉ.पी. रविचन्द्रन		
	सत्र 4	डॉ.मदन मोहन	डॉ.के.एस. मोहम्मद		
3.	आनुवंशिकी, प्रजनन एवं जैवप्रौद्योगिकी (जी बी)				
	सत्र 1	डॉ. के.के. वास	डॉ.जी. गोपी कृष्णा		
	सत्र 2	डॉ.टी.जे. पांडियन	डॉ.पी.सी. तोमस	24	15
	सत्र 3	डॉ. पी. जयशंकर	डॉ.के.एन. मोहन्ता		
4.	पर्यावरण संघात एवं जलकृषि स्वास्थ्य (ई एच)				
	सत्र 1	डॉ. पी.के. कटिहा	शून्य	19	12
	सत्र 2	डॉ.वी.एन. पिल्लै	शून्य		
5.	पौष्टिकता और मछली स्वास्थ्य (एन एच)				
	सत्र 1	डॉ. आर. पोल राज	डॉ. ए. के. पाल		
	सत्र 2	डॉ. जी. आर. एम. राव	डॉ. पी. विजयगोपाल	43	17
	सत्र 3	डॉ. एन. सारंगी	डॉ. एस. एम. पिल्लै		
	सत्र 4	डॉ. के. के. विजयन	डॉ. जे. के. सुन्दराय		
6.	संग्रहण एवं संग्रहण - उपरांत पौद्योगिकी (एच पी)				
	सत्र 1	डॉ. टी. के. श्रीनिवास गोपाल	डॉ. लीला एडिवन		
	सत्र 2	डॉ. एस. डी. सिंह	डॉ. टी. वी. शंकर	17	9
	सत्र 3	डॉ. एन. कलैमणी	डॉ. सी. एन. रविशंकर		
7.	समाज - आर्थिकी, विपणन एवं आजीविका (एस ई)				
	सत्र 1	डॉ. सी. वासुदेवप्पा	डॉ. आर. नारायणकुमार	18	6
	सत्र 2	डॉ. आर. सत्यदास	डॉ. एम. कृष्णन		
8.	मछली एवं मछली से जुड़ी हुई जैवविविधता (बी डी)				
	सत्र 1	डॉ. आर. सौन्दरराजन	डॉ. जी. महेश्वरुडू	9	5
	सत्र 2	डॉ. एस. अजमल खान	डॉ. टी. एस. निवामी		
9.	जलवायु परिवर्तन और प्रकृतिक आपदा प्रबंधन (सी सी)				
		डॉ. ई. वी. राधाकृष्णन	डॉ. वी. वी. सिंह	4	3
10.	मात्स्यिकी विपणन, नीति एवं शासन (एफ टी)				
		डॉ. वाई. एस. यादवा	डॉ. आर. नारायणकुमार		4



## पोस्टर प्रस्तुतीकरण

मात्स्यिकी संपदाएं, मनोरंजन मात्स्यिकी एवं टिकाऊ प्रबंधन	57	39
जलकृषि उत्पादन	40	16
पौष्टिकता और मछली स्वास्थ्य	43	17
आनुवंशिकी, प्रजनन और जैवप्रौद्योगिकी	24	15
पर्यावरण संघात और जलीय स्वास्थ्य	19	12
संग्रहण एवं संग्रहण - उपरांत प्रौद्योगिकी	17	9
समाज - आर्थिकी, विपणन और आजीविका	18	6
मात्स्यिकी विपणन, नीति और शासन	-	-
मछली और मछली से जुड़ी हुई जैवप्रौद्योगिकी	9	5
जलवायु परिवर्तन और प्राकृतिक आपदा प्रबंधन	4	3

## पोस्टर सत्र





# 9 वीं इंडियन फिशरीस फोरम की सत्रों का दृश्य





# झलकें



डॉ. पी.एस.बी.आर. जेम्स भाषण देते हुए

## समांतर सत्र

मौखिक एवं पोस्टर प्रस्तुतीकरण के अतिरिक्त निम्नलिखित दो समांतर सत्र भी आयोजित किए गए:

एफ ए ओ द्वारा 20 दिसंबर, 2011 के अपराह्न को टिकाऊ आजीविका के लिए मात्स्यिकी प्रबंधन (एफ आइ एम एस यू एल)

इस सत्र में निम्नलिखित मुद्दों पर प्रकाश डाला गया:

- एफ आइ एम एस यू एल की पृष्ठभूमि
- तमिल नाडू और पुदुच्चेरी में समुद्री मात्स्यिकी में आजीविका के परिवर्तन और प्रवणताएं
- तमिल नाडू और पुदुच्चेरी में समुद्री मात्स्यिकी प्रबंधन के लिए विकल्प
- तमिल नाडू और पुदुच्चेरी में समुद्री मात्स्यिकी के नीति और कानूनी ढांचों पर विकल्प

डॉ. के. गोपकुमार, डॉ. एस. डी. त्रिपाठी और डॉ. वी. एन. पिल्लै एफ आइ एम एस यू एल समांतर सत्र के नामिका सदस्य थे।



डॉ. जी. सैदा रावु, आयोजक, 9 वीं आइ एफ एफ एवं निदेशक, सी एम एफ आर आइ कृतज्ञता अदा करते हुए

## पी एफ जी एफ पुरस्कार समारोह

प्रोफेशनल फिशरीस ग्राजुएट फोरम का पुरस्कार समारोह 22 दिसंबर, 2011 को आयोजित किया गया। डॉ. जी. सैदा रावु, निदेशक, सी एम एफ आर आइ मुख्य अतिथि रहे। डॉ. ए. पी. शर्मा, निदेशक, सी आइ एफ आर आइ और डॉ. जे. के. जेना, निदेशक, एन बी एफ जी आर को पुरस्कार समारोह में सम्मानित किया गया।



## सर्वोत्तम भारतीय मात्स्यिकी वैज्ञानिक पुरस्कार : 2011



पुरस्कार विजेता : डॉ. बसंत कुमार दास, सी आई एफ ए, भुवनेश्वर,  
सराहना प्रमाण पत्र : डॉ. मुकुन्द गोस्वामी, एन बी एफ जी आर, लखनऊ

## सर्वोत्तम एम एफ एस सी और पीएच डी थिसीस पुरस्कार

**डॉ. करुणासागर उत्तम स्नातकोत्तर थिसीस (पीएच. डी. - भारतीय वर्गीकरण) पुरस्कार - 2011**

केंद्रीय मात्स्यिकी शिक्षा संस्थान मुम्बई (2009) के डॉ. शैलेश सौरभ को अपना थिसीस - इम्यूण रिसपोन्स ऑफ इंडियन मेजर कार्प, *लाबिया रोहिता* (हामिल्टन) टू फ्रेशवाटर फिश लौस, *अर्गलस इनफेस्टेशन* के लिए पुरस्कार।

**डॉ. वी. जी. जिगरन उत्तम स्नातकोत्तर विदेशी थिसीस (पीएच. डी. - विदेश वर्गीकरण) पुरस्कार - 2011**

डॉ. विकास कुमार को अपना थिसीस - डिटोक्सिफिकेशन ऑफ जट्रोफाकरकास सीड मील एंड प्रोटीन कोनसेन्ट्रेट एन्ड देयर यूटिलाइजेशन इन फिश न्यूट्रीशन -यूनिवर्सिटी ऑफ होहनीम जर्मनी (2011)

**डॉ. एन. आर. मेनोन उत्तम स्नातकोत्तर थिसीस (एम. एफ. एससी. वर्गीकरण) पुरस्कार - 2011**

श्री देवीवरप्रसाद रेड्डी को अपना एम एफ एससी थिसीस संवर्धित चिंगटों में वाइट स्पोट सिन्ड्रोम वाइरस (डब्ल्यू एस एस वी) का अतिजीवित करने के लिए संसाधन उपचार का प्रभाव - तमिल नाडु पशुचिकित्सा एवं पशु विज्ञान विश्वविद्यालय तूतुकुडी - 682 008 (2010)



## पूर्ण अधिवेशन

सम्मेलन का पूर्ण अधिवेशन दिनांक 23.12.2011 को पूर्वाह्न 11.30 बजे इमेज ओडिटोरियम में आयोजित किया गया। डॉ. पी. रविचन्द्रन, सह आयोजक, 9वीं आई एफ एफ ने सभा का स्वागत किया। डॉ. जी. सैदा रावु, निदेशक, सी एम एफ आर आई अध्यक्ष रहे। डॉ. पी. कृष्णय्या, आई ए एस, मुख्य एक्सक्यूटिव, एन एफ डी बी मुख्य अतिथि रहे। तीन विशेषज्ञों की नामिका - डॉ. पी. एस. बी. आर. जेम्स, डॉ. एस. टी. त्रिपाठी और डॉ. के. ए. नरसिंहम - ने सिफारिशों का प्रस्तुतीकरण किया। पूर्ण अधिवेशन के दौरान उत्कृष्ट पोस्टरों के लिए स्थापित सी एम एफ आर आई पुरस्कार प्रदान किए गए। इस श्रेणी में कुल 16 पुरस्कार दिए गए।

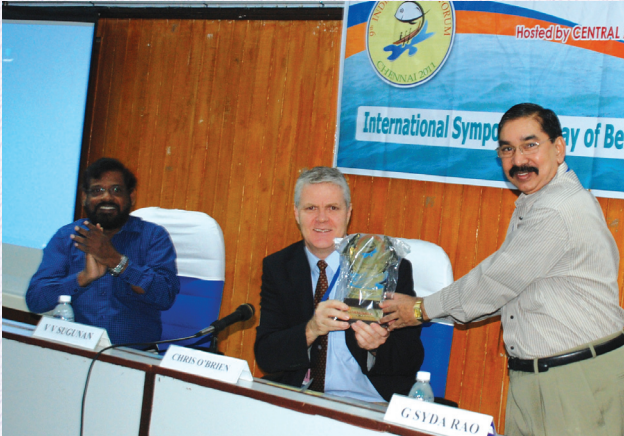
प्रतियोगिता श्रेणी में चार युवा वैज्ञानिकों ने पुरस्कार ग्रहण किए।



## बृहत् समुद्री आवास तंत्र पर अंतर्राष्ट्रीय परिचर्चा

सम्मेलन के समांतर कार्यक्रम के रूप में 21 दिसंबर 2012 को बी ओ बी एल एम ई द्वारा बंगाल उप सागर बृहत् समुद्री आवास तंत्र में मात्स्यिकी की ओर आवास व्यवस्था अभिगम विषय पर अंतर्राष्ट्रीय परिचर्चा आयोजित की गयी।

डॉ. केन्नेथ घेरमन, एन ओ ए ए, यु एस ए ने मुख्य भाषण पेश किया। इस के अतिरिक्त डॉ. क्रिस ओ' ब्रिएन (बी ओ बी एल एम ई), डॉ. रुडोल्फ हेरमेस (बी ओ बी एल एम ई), डॉ. जे. समराकून (श्रीलंका), डॉ. वी.वी. सुगुणन (बी ओ बी एल एम ई), डॉ. सुनिल के. मोहम्मद (सी एम एफ आर आइ) और डॉ. पी. यू. सक्करिया (सी एम एफ आर आइ) ने भी भाषण दिया।



डॉ.जी.सैदा रावु डॉ.क्रिस ओ' ब्रिएन का स्वागत करते हुए



डॉ.एस.एन.द्विवेदी और डॉ. जी.सैदा रावु डॉ.केन्नेथ घेरमेन को  
उपहार प्रदान करते हुए



डॉ. वाइ.एस.यादवा, निदेशक, बी ओ बी पी भाषण देते हुए



डॉ. माइकिल जे.ओ' टूले



डॉ. क्रिस ओ' ब्रिएन



डॉ. एस.एन.द्विवेदी



## 9 वीं आइ एफ एफ के सिफारिश

- नवीं इंडियन फिशरीस फोरम मात्स्यिकी के अलग केंद्र मंत्रालय के लिए शक्त रूप से सिफारिश करती है।
- स्थानिक और कालिक आधार पर मात्स्यिकी संपदाओं के आंकड़ा इकट्ठा करने की आवश्यकता है।
- टिकाऊपन की निरंतरता के लिए मछली प्रभव के प्रबंधन का आधार आवास व्यवस्था पर आधारित मात्स्यिकी प्रबंधन होना चाहिए।
- आजीविका के टिकाऊपन, लिंग की समस्याएं, आवास तंत्र अभिगम और सह प्रबंधन पर पर्याप्त ध्यान देते हुए राष्ट्रीय और राज्य स्तर पर मात्स्यिकी प्रबंधन और शासन का पुनर्विन्यास किया जाना चाहिए।
- टिकाऊ जलकृषि उत्पादन में व्यवस्थाओं और मछली जातियों का विविधीकरण एक प्रमुख आवश्यकता है। इस के लिए सामाजिक तथा पर्यावरणीय विचारों से साकल्यवादी प्रौद्योगिकी पैकेजों का विकास करना आवश्यक है।
- जलकृषि और समुद्री संवर्धन के विस्तार में होने वाली प्रौद्योगिकी की कमियाँ दूर करने के लिए, पौष्टिकता, स्वास्थ्य और चयनात्मक प्रजनन के जैवप्रौद्योगिकी पहलुओं पर विशेष ध्यान देना आवश्यक है।
- नवीन बयोमोलिक्यूल्स और न्यूट्रास्यूटिकल्स के विकास के लिए मराइन-बयोप्रोस्पेक्टिंग पर विशेष ध्यान देने की जरूरत है।
- जलकृषि में, उत्पादन, उत्पादकता और आर्थिक सक्रियता बढ़ाए जाने के लिए टिकाऊ गहनता लाना आवश्यक है।
- हाल ही में समुद्री बास, कोबिया और पोम्पानो जैसी वाणिज्यिक प्रमुख मछलियों के प्रजनन और संतति उत्पादन में हुई सफलता के प्रसंग में, देश में मछली पालन की उच्च शक्यता को मानते हुए स्फुटनशालाओं को गुणतायुक्त अंडशावकों की पूर्ति करके समुद्री पख मछली पालन और उत्पादन में बढोत्तरी लाने के उद्देश्य से जैव सुरक्षित ब्रूड स्टॉक बैंक स्थापित करना आवश्यक है।
- मात्स्यिकी में अब होने वाला अनुसंधान एवं विकास के अभिगम में जलवायु परिवर्तन की समस्याओं को सम्मिलित करना आवश्यक है।

## भारत के उत्कृष्ट मात्स्यिकी छात्र

नाम	श्रेणी	कॉलेज/विश्वविद्यालय
सिबिना मोल	I	मात्स्यिकी एवं महासागर अध्ययन का केरल विश्वविद्यालय
वैशाख जी.	II	मात्स्यिकी एवं महासागर अध्ययन का केरल विश्वविद्यालय
रम्या एल.	III	मात्स्यिकी एवं महासागर अध्ययन का केरल विश्वविद्यालय
हुयरेम भारती	IV	मात्स्यिकी कॉलेज, केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय, त्रिपुरा
सलोनी शिवम	V	मात्स्यिकी कॉलेज एवं अनुसंधान केंद्र, टूटिकोरिन, तमिलनाडू पशु चिकित्सा एवं पशु विज्ञान विश्वविद्यालय





- देश में शास्त्रीय एवं टिकाऊ मात्स्यिकी के शासन को प्रोत्साहित करने के उद्देश्य से अंतःस्थलीय मात्स्यिकी सहित मात्स्यिकी क्षेत्र से जुड़े हुए सहकारी संस्थाओं की पुनःस्थापना करना आवश्यक है।
- पर्याप्त योग्यता युक्त मानव संपदा द्वारा मात्स्यिकी अनुसंधान विस्तार की व्यवस्था को प्रबल कराना आवश्यक है।
- गैर सरकारी संगठनों, मछुआरा संघों और अन्य एजेंसियों के सहयोग से उत्तरदायित्वपूर्ण मात्स्यिकी पर राष्ट्रीय अभियान आयोजित करना चाहिए।
- भौगोलीय बाजार में जलकृषि और समुद्री संवर्धन उत्पादों की प्रतिस्पर्धा बढ़ाने के लिए खाद्य सुरक्षा, प्राप्यता और सामाजिक

न्यायसंगतता पर ध्यान देना आवश्यक है।

- हाल ही में लक्षद्वीप में ट्यूना के अवतरण में हुआ तीव्र उतार-चढ़ाव और इस के द्वारा द्वीपवासियों की आजीविका में होने वाले गंभीर परिणामों पर विचार करते हुए, श्रीलंका, मालिद्वीप और भारत के संयुक्त सहयोग से महासागरीय और जलवायु प्राचलों पर तुरंत ही क्षेत्रीय वैज्ञानिक अनुसंधान करना आवश्यक है
- पोत पर आधारित समुद्री मात्स्यिकी अनुसंधान को प्रोत्साहित किया जाना चाहिए। वैज्ञानिक समुद्री यात्रा में भाग लेने वाले वैज्ञानिकों और तकनीकी कर्मिकों को प्रोत्साहन योजनाएं दी जानी चाहिए।
- समुद्री मछली अवतरण पर समय श्रेणी

आंकड़े के संग्रहण का उत्तरदायित्व सी एम एफ आर आइ को उठाना चाहिए।

- खुला समुद्री पिंजरा मछली पालन और तटीय जलकृषि को प्रोत्साहित करने के उद्देश्य से संबंधित समुद्रवर्ती राज्यों द्वारा पट्टे की नीति रूपाइत करना चाहिए।
- मछली और मात्स्यिकी उत्पादों के घरेलू बाजारों के विपणन के लिए घरेलू बाजारों की शुरुआत पर प्राथमिकता और प्रधानता दी जानी चाहिए। उन्हीं स्थानों पर अंतर्राष्ट्रीय उपकरणों के समतुल्य घरेलू इकोलेबलिंग और प्रमाणन व्यवस्था की जानी चाहिए।
- मात्स्यिकी में उद्गामी राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय चुनौतियों के आनुपातिक रूप से मानव संसाधन में गुणतायुक्त समानता लाने के लिए विशेष ध्यान देना चाहिए।

## युवा वैज्ञानिक पुरस्कार

**डॉ. ए.के.साहु** मछली रोगविज्ञान और जैवप्रौद्योगिकी प्रयोगशाला, जलकृषि विभाग, मात्स्यिकी कॉलेज, मांगलूर, कर्नाटक/अब सी आइ एफ आर आइ, बैरकपुर में कार्यरत

“अर्ध-गहन पालन व्यवस्था में श्वेत चित्ति रोग के लिए पेनिअस मोनोडोन पोसिटिव की सहज प्रतिरक्षा प्रतिक्रिया पर हिस्टोपाथोलजिकल खोज”

**श्री देवीवरप्रसाद रेड्डी अल्ला** मात्स्यिकी कॉलेज एवं अनुसंधान संस्थान, टी ए एन यू वी ए एस, तूचुकुडी, तमिल नाडू

“पालित चिंगटों में वाइट स्पोट सिन्ड्रोम वाइरस की अतिजीवितता पर संसाधन उपचार का प्रभाव और डब्लियू एस एस वी पर जैव टीका अध्ययन”

**श्री के.के.प्रजित** स्कूल ऑफ इन्डस्ट्रियल फिशरीस, कोचीन विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय, कोचीन, केरल

“भीमाकार मीठा पानी झींगा माक्रोब्राचियम रोसेनबर्गी की टिकाऊ जलकृषि के लिए बयोफ्लोक प्रौद्योगिकी (बी एफ टी) का प्रयोग: पानी की गुणता और उत्पादन पर प्रभाव”

**श्री सुशील कुमार गरनायक** केंद्रीय मीठा पानी जलकृषि संस्थान, भुवनेश्वर, उड़ीसा

“एशियन शिंगटी, क्लारियसबट्राकस में 17-ऐस्ट्राडियल से उत्तेजित वाइटलोर्जेनिन जीन और प्रोटीन का अभिलक्षण.”





## 9 वीं आइ एफ एफ प्रदर्शनी के सहभागी

- |   |                 |
|---|-----------------|
| • राष्ट्रीय मत्स्य आनुवंशिकी संसाधन ब्यूरो        | - लखनऊ          |
| • शीत जल मत्स्य अनुसंधान निदेशालय                 | - भीमताल        |
| • केंद्रीय ताजा जल-जीव पालन संस्थान               | - भुवनेश्वर     |
| • केंद्रीय अंतःस्थलीय मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान | - बैरकपुर       |
| • केंद्रीय मत्स्य शिक्षा संस्थान                  | - मुम्बई        |
| • केंद्रीय मात्स्यिकी प्रौद्योगिकी संस्थान        | - कोच्ची        |
| • केंद्रीय खारा पानी जल-जीव पालन संस्थान          | - चेन्नई        |
| • केंद्रीय कृषि अनुसंधान संस्थान                  | - पोर्ट ब्लेयर  |
| • राष्ट्रीय मात्स्यिकी विकास बोर्ड                | - हैदराबाद      |
| • प्लान्ट नेटवर्क                                 | - चेन्नई        |
| • अक्वास्टार                                      | - चेन्नई        |
| • लार्क इन्नोवेटिव टेक्नोलोज                      | - चेन्नई        |
| • अक्वा वर्ल्ड                                    | - चेन्नई        |
| • मत्स्यफेड                                       | - तिरुवनन्तपुरम |
| • केंद्रीय समुद्री मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान    | - कोच्ची        |



डॉ. के.गोपकुमार प्रदर्शनी का उद्घाटन करते हुए



डॉ. के.गोपकुमार स्टाल में मुआइना करते हुए



सी एम एफ आर आइ का स्टाल



प्रदर्शनी का दृश्य



## सांस्कृतिक कार्यक्रम

दिनांक 20.12.2011 को अपराह्न 6.00 बजे सांस्कृतिक कार्यक्रम आयोजित किया गया। मद्रास क्राफ्ट फाउन्डेशन ऑफ दक्षिण चित्रा द्वारा कार्यक्रम प्रस्तुत किया गया। कार्यक्रम में तमिल नाडू वाद्यम और तनिगै राजू एंड टीम का लोक नृत्य, श्रीमती राधिका शूरजित



एंड टीम का भरतनाट्यम और श्रीमती सन्दिता बसु घोष एंड टीम का उडीसी नृत्य सम्मिलित थे।

सांस्कृतिक कार्यक्रम के बाद 9 वीं आइ एफ एफ, श्री राजन (नेल्लूर हैचरीस, नेल्लूर) और श्री एम.सुधाकरन (अक्वा लाइफ सिस्टम, ऑंगोल) द्वारा प्रायोजित भोजन था।



लोक नृत्य



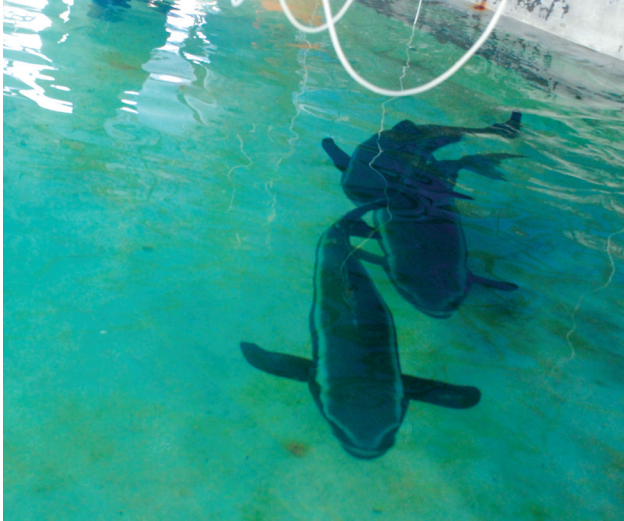
### 9 वीं इंडियन फिशरीस फोरम

कुल 22 भारतीय राज्यों और 4 संघ  
राज्य क्षेत्रों के लेखकों और सह लेखकों की कुल संख्या - 1349  
आयोजकों की सूची:

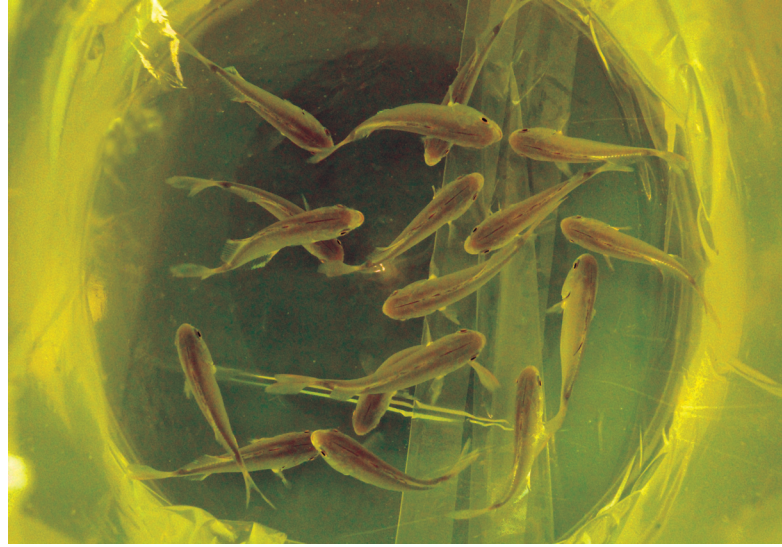
• भा कृ अनु प संस्थान	-	8
• भा कृ अनु प के अतिरिक्त सरकारी संगठन	-	24
• विश्वविद्यालय (राज्य कृषि विश्वविद्यालय सहित) और आइ आइ टी	-	53
• कॉलेज	-	25
• गैर सरकारी संगठन और निजी संगठन	-	5
• अंतर्राष्ट्रीय संगठन	-	18



## मंडपम क्षेत्रीय केंद्र में कोबिया और पोम्पानो मछलियों के प्रजनन और डिंभक उत्पादन की विजय-गाथा



प्रजनन टैंक में प्रजनक मछलियाँ



पोम्पानो की अंगुलि मछलियाँ

**सी** एम एफ आर आइ मंडपम क्षेत्रीय केंद्र में कोबिया मछली राचिसेन्ट्रोन कनाडम के दो सफल प्रजनन के बाद दिनांक 7 अक्तूबर, 2 नवंबर और 2 दिसंबर, 2011 को क्रमशः तीसरा, चौथा और पांच वां अंडजनन और डिंभक उत्पादन में सफलता प्राप्त की गयी।

सी एम एफ आर आइ मंडपम क्षेत्रीय केंद्र में पोम्पानो मछली ट्रिकिनोटस ब्लोची के दो सफल प्रजनन के बाद दिनांक 8 अक्तूबर, 21 अक्तूबर और 17 नवंबर, 2011 को क्रमशः तीसरा, चौथा और पांच वां अंडजनन और डिंभक उत्पादन सफल रूप से किया जा सका।

## कोबिया और पोम्पानो के अंगुलि मछलियों को कारवार अनुसंधान केंद्र तक परिवहन



डॉ.जी.गोपकुमार, प्रभारी वैज्ञानिक, मंडपम क्षेत्रीय केंद्र कोबिया और पोम्पानो मछली संततियों को कारवार अनुसंधान केंद्र को प्रदान करने का दृश्य

**मंडपम** से दिनांक 18 अक्तूबर, 2011 को लगभग 8.0 से 9.0 से.मी. के लंबाई परास के कोबिया मछली की 1010 अंगुलि मछलियों और लगभग 3.4 से 7.5 से.मी. के लंबाई परास के पोम्पानो मछली की 2500 अंगुलि मछलियों को कारवार अनुसंधान केंद्र तक परिवहन किया गया। इसके बाद दिनांक 24 अक्तूबर, 2011 को कोबिया मछली की लगभग 5.6 से 19.5 से.मी. के लंबाई परास की 950 अंगुलि मछलियों को भी कारवार अनुसंधान केंद्र को परिवहित किया गया।



## मंडपम क्षेत्रीय केंद्र में मछुआरों द्वारा कोबिया और पोम्पानो की अंगुलि मछलियों का संग्रहण



डॉ. एम.वी.गुप्ता, अध्यक्ष, आर ए सी, सी एम एफ आर आइ श्री श्रीनिवास राजू को कोबिया संततियों को प्रदान करते हुए



श्री नागदोस को पोम्पानो मछली संततियों को प्रदान करते हुए

### समुद्री संवर्धन स्वीकार्यता का नया मान

डॉ. एम.वी.गुप्ता, अध्यक्ष, आर ए सी, सी एम एफ आर आइ ने कोबिया मछली की लगभग 7.5 से.मी. की लंबाई की 606 और 17 से.मी. की औसत लंबाई की 201 अंगुलि मछलियों को 17 नवंबर, 2011 को आंध्र प्रदेश के पूर्व गोदावरी जिला के अन्तारवेदी के श्री श्रीनिवास राजू को निदर्शनार्थ प्रदान किया। उन्होंने पोम्पानो मछली की लगभग 2.5 से.मी. की लंबाई की 1250 और 2200 अंगुलि मछलियों को क्रमशः रामनाथपुरम जिला के वेदालै गाँव के श्री नागदोस और तूतुकुडी जिला के पुत्रैकायल गाँव के श्री भास्कर को परीक्षाणात्मक पालन के लिए प्रदान किया।



श्री भास्कर को पोम्पानो मछली संततियों को प्रदान करते हुए

### मंडपम में पोम्पानो मछली का पिंजरा पालन



पोम्पानो मछली का पिंजरा पालन

स्फुटनशाला में उत्पादित पोम्पानो (टकिनोटस ब्लोची) की अंगुलि मछलियों को भारत में पहली बार सी एम एफ आर आइ मंडपम क्षेत्रीय केंद्र में परीक्षणार्थ पिंजरे में पालन किया गया। अंगुलि मछलियों को नर्सरी पालन के बाद सितंबर, 2011 में स्टॉक किया गया। इसके बाद लंबाई में 6.0 से 7.0 से.मी. और भार में 12 से 14 ग्रा. तक की वृद्धि हुई। मछलियों को खाने के लिए दिन में दो बार यथेष्ट कचरा मछलियाँ दी गयी।

(जी.गोपकुमार, ए.के.अब्दुल नासर, आर.जयकुमार, जी.तमिलमणी, एम.शक्तिवेल, सी.कालिदास और पी.रमेश कुमार, मंडपम क्षेत्रीय केंद्र की रिपोर्ट)



## भारत के दक्षिण-पूर्व के चित्रपालम (पाम्बन) में पतला सूर्यमीन का अवतरण



(के.विनोद और एन.राममूर्ति, सी एम एफ आर आइ मंडपम क्षेत्रीय केंद्र की रिपोर्ट)

## वेदालै के श्री नागदोस को महाचिंगट के वज़न बढ़ाव से अधिकतम लाभ

सी एम एफ आर आइ मंडपम क्षेत्रीय केंद्र ने वर्ष 2009 में खुले सागर में प्रग्रहण पर आधारित जलकृषि द्वारा महाचिंगट के पालन का निदर्शन आयोजित किया था। इस निदर्शन से रामनाथपुरम जिला के वेदालै गाँव के श्री रामदोस महाचिंगट के वज़न बढ़ाव के बारे में समझ पाया। इस विषय पर और भी अधिक ज्ञान प्राप्त करके उन्होंने 60 X 60 फीट के व्यास का पिंजरा बनाकर चारों भाग मछली जाल से आवृत किया और पिंजरे के चारों भाग प्रबल बनाने के लिए कैसुरीना के खम्भ लगाए गए। पिंजरे को 30 X 20 फीट के दो भागों में विभाजित किया गया और वर्ष 2010 में प्राकृतिक स्थानों से संग्रहित महाचिंगट के 800 संततियों को डाला गया। छः महीनों के बाद उन्होंने 190 कि.ग्रा. महाचिंगटों का फसल संग्रहण किया और उन्हें 1585 लाख रुपए का लाभ भी प्राप्त हुआ। आय-व्यय का विवरण नीचे दिया जाता है:



श्री नागदोस अपने अनुभव का विवरण देते हुए

(जोनसन बी. और जी.गोपकुमार, सी एम एफ आर आइ मंडपम क्षेत्रीय केंद्र की रिपोर्ट)

<b>व्यय</b>	
मछली जाल	- रु. 15,000
संतति (प्रति कि.ग्रा. को 300/- रुपए की दर में 65 कि.ग्रा.)	- रु. 20,000
कैसुरीना खम्भे	- रु. 2,000
खाद्य	- रु. 18,000
परिवहन	- रु. 5,000
<b>कुल आय</b>	<b>- रु. 60,000</b>
प्रति कि.ग्रा. को 1150/- रु. (औसत) की दर में 190 कि.ग्रा.	- रु. 2,18,500
<b>लाभ</b>	<b>- रु. 1,58,500</b>



## समुद्री मछली पालन में एफ सी आर 1:2.8 : कारवार अनुसंधान केंद्र की महत्वपूर्ण उपलब्धि

कारवार अनुसंधान केंद्र में समुद्री मछली पिंजरों में 11 महीनों की पालन अवधि के दौरान पहली बार समुद्री बास मछली के 2.1 कि.ग्रा. के औसत भार की उच्चतम बढ़ती दर रिकार्ड की गयी। आर जी सी ए, सिरकाली से समुद्री बैस मछली के अंगुलि मीन लाकर जनवरी 2011 महीने में पिंजरे में संभरित किया गया और दिसंबर महीने के प्रथम सप्ताह



संग्रहित समुद्री बास मछलियों का दृश्य

में इन का फसल संग्रहण किया गया। संग्रहित मछलियों का न्यूनतम आकार 1.8 कि.ग्रा. (49 से.मी.) और अधिकतम आकार 2.7 कि.ग्रा. (58 से.मी.) आकलित किया गया। इस परीक्षण में उपयुक्त किया गया खाद्य तारली था। इस परीक्षण में एफ सी आर 1:2.8 आकलित किया गया।



2.8 कि.ग्रा. भार की समुद्री बास मछली

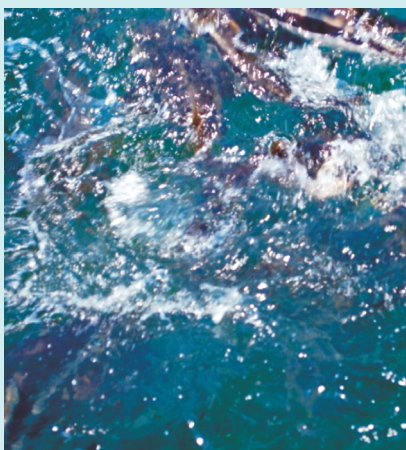
## कम आय वाले मछुआरों को कम लागत का पिंजरा : कारवार अनुसंधान केंद्र का नवोन्मेषी कार्यक्रम

कारवार अनुसंधान केंद्र में समुद्री बास, स्नापेर्स और समुद्री ब्रीम मछलियों के पालन का निदर्शन के लिए 3 मी. व्यास और कम लागत के पिंजरे विकसित किए गए। स्थानीय मछुआरों को छोटे पैमाने का पिंजरा मछली पालन की ओर प्रोत्साहित करने के उद्देश्य से कारवार अनुसंधान केंद्र में कम लागत की प्रौद्योगिकी विकसित की गयी। लगभग 1.5" व्यास के जी आइ पाइप उपयुक्त करके एपोकसी पेइन्ट लगाकर पिंजरे का निर्माण किया गया। उत्प्लावन के लिए 28 एल बी वायु भरे गए फाइबर के 6 बैरल उपयुक्त किए गए। पिंजरे में 18 मि.मी. का आंतरिक एच डी पी ई जाल और 48 मि.मी. का बाहरी एच डी पी ई जाल बांधा गया था। लंगर करने के लिए 1.5 टन भार के कंकरीट ब्लॉक उपयुक्त किए गए। इस पिंजरे में संभरण की सघनता समुद्री बास मछली के 2000 अंगुलि मीन और उत्पादन क्षमता 1.5 टन मछली है। पिंजरा, प्लव, जाल, लंगर आदि सहित पिंजरा निर्माण का लागत केवल 50,000/- रुपए है।



सी एम एफ आर आइ समुद्री खेत में 3 मी. व्यास का पिंजरा

## सी एम एफ आर आइ द्वारा कारवार में पोम्पानो और कोबिया का खुला सागर पालन



पिंजरे में कोबिया की अंगुलिकाएं



पोम्पानो तारली मांस खाते हुए

सी एम एफ आर आइ द्वारा पहली बार कारवार में पोम्पानो, ट्रकिनोटस ब्लोची और कोबिया, राचिसेन्टोन कनाडम का खुला सागर पालन शुरू किया गया। इस के लिए अक्तूबर, 2011 महीने में कोबिया मछली की लगभग 9 से.मी. की लंबाई की 2000 अंगुलिकाओं और पोम्पानो मछली की लगभग 5 से.मी. की लंबाई की 2500 अंगुलिकाओं को सी एम एफ आर आइ मंडपम क्षेत्रीय केंद्र से कारवार तक परिवहन किया गया। कारवार के सी एम एफ आर आइ समुद्री खेत में, 6 मी. व्यास के दो पिंजरों में इन संततियों का संभरण किया गया। उसी दिन शाम को खाद्य के रूप में कतरा गया तारली मांस दिया गया। एक महीने के अंदर कोबिया में 14 से.मी. और पोम्पानो में 6 से.मी. की बढ़ती दर दिखायी पड़ी। परिवहन या पिंजरों में मृत्युता बिलकुल नहीं देखी गयी। इस से इन दोनों मछली जातियों की तटीय जल में पालन करने की शक्यता व्यक्त हो जाती है।



## सिपिकुलम की मछुआरिनों को समुद्री मोती उत्पादन में सी एम एफ आर आइ का मार्गदर्शन

सेन्टर फोर मराइन लिविंग रिसोर्स एंड इकोलजी (सी एम एल आर ई), भू विज्ञान मंत्रालय, भारत सरकार की निधिबद्धता से सी एम एफ आर आइ टूटिकोरिन अनुसंधान केंद्र द्वारा टूटिकोरिन के सिपिकुलम गाँव के हिताधिकारियों के लिए वर्ष 2009-11 के दौरान 'समुद्री मोती उत्पादन पर प्रौद्योगिकी निदर्शन एवं हस्तांतरण' विषयक परियोजना रूपाइत की गयी।

सिपिकुलम गाँव की 10 मछुआरिनों को अगस्त, 2010 और जनवरी, 2011 महीनों में 'वृत्ताकार मोती उत्पादन तकनीक' विषय पर प्रशिक्षण दिया गया और प्रशिक्षण के बाद भागीदारों को प्रमाण पत्र प्रदान किया गया।

प्रशिक्षण प्राप्त मछुआरों ने नियमित रूप से परियोजना टीम के मार्गदर्शन में लगभग 2,500 मुक्ता शक्तियों में 4 मि.मी. व्यास के

शेल बीड न्यूक्लियस का रोपण किया। केंद्रक रोपण किए गए शक्तियों की देखभाल, बढ़ती का आकलन एवं मृत्युता, अपशिष्टों की सफाई रैफ्ट की संरचना का प्रबंधन आदि कार्य मछुआरा महिलाओं द्वारा किया गया। लगभग 8 महीने की पालन अवधि के बाद दिनांक 17.11.2011 को सिपिकुलम गाँव में आयोजित कार्यक्रम में पालित शक्तियों का 'भागिक संग्रहण' किया गया। डॉ. एम.एस.मदन, प्रधान वैज्ञानिक एवं प्रभारी वैज्ञानिक कार्यक्रम में अध्यक्ष रहे। श्रीमती प्रभावती, सहायक निदेशक, तमिल नाडु मात्स्यिकी विभाग, श्री एम.आर.नटराजन, प्रबंधक (जिला विकास), नाबार्ड, गाँव का पुरोहित फादर शेल्वन और डॉ. आइ.जगदीश, वरिष्ठ वैज्ञानिक एवं परियोजना का प्रधान अन्वेषक, टूटिकोरिन अनुसंधान केंद्र के कर्मचारी सदस्य भी उपस्थित थे।

भागिक मोती संग्रहण का परिणाम अत्यंत

आशावह था और अच्छी गुणतायुक्त वृत्ताकार समुद्री मोती प्राप्त हुए। इस तरह सिपिकुलम गाँव की मछुआरा महिलाएं पालन खेत में शक्तियों का अनुरक्षण, वृत्ताकार केंद्रक का रोपण, केंद्रक रोपण की गयी शक्तियों का पालन और उत्पादित मातियों का संग्रहण सहित पूरा पालन कार्य करने वाला 'गाँव का प्रथम ग्रुप' बन गयी।

कार्यक्रम का परिणाम देखकर जिलाधीश अत्यंत प्रोत्साहित हो गए और उन्होंने मात्स्यिकी के सहायक निदेशकों को नबार्ड की वित्तीय सहायता से और अधिक गाँवों में भी मोती उत्पादन करने के लिए सी एम एफ आर आइ टूटिकोरिन अनुसंधान केंद्र से संपर्क करने का अनुदेश दिया। यह कार्यक्रम जल्दी ही शुरू किया जाएगा।

(आइ.जगदीश, सी एम एफ आर आइ टूटिकोरिन अनुसंधान केंद्र की रिपोर्ट)



मोती संग्रहण का उद्घाटन



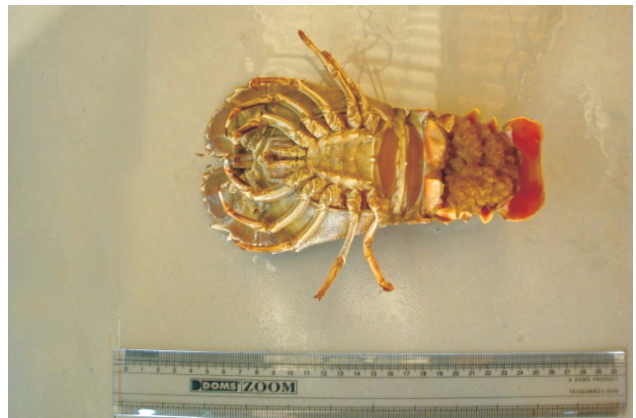
मात्स्यिकी सहायक निदेशक मातियों का निरीक्षण करती हुई



गाँव का पुरोहित उत्पादित मोतियों के साथ

## टूटिकोरिन अनुसंधान केंद्र में रेती महाचिंगट के प्रजनन कार्यक्रम का प्रारंभ

केंद्र में चालू अनुसंधान परियोजना 'MD/IDP/01, कवच मछलियों के संतति उत्पादन के लिए प्रौद्योगिकी का विकास' के अंदर 'रेती महाचिंगट थीनस ओरिएन्टालिस के अंडशावक विकास' और प्रजनन कार्य शुरू किया गया। आकलनों से यह व्यक्त हो गया कि इस क्षेत्र में रेती महाचिंगटों की उपस्थिति बहुत कम है। दिसंबर, 2011 महीने में आनाय मालिकों से अंडशावकों को संग्रहित करने का अनुदेश किया गया था जिसके अनुसार लगभग 180-218 मि.मी. और 250-320 ग्रा. के आकार/ भार युक्त कुछ अंडशावक प्राप्त हुए, जिन में एक मादा अंडयुक्त अवस्था में थी। लगभग 1.0 टन धारिता के एफ आर पी टैंक में साफ रेत धरातल के रूप में डालकर प्रतिदिन 300% पानी का परिचालन होने वाले पुनःचक्रण व्यवस्था बनायी गयी। अंडशावकों को खाने के लिए साफ और स्वच्छ सीपी (पाफिया मलबारिका) मांस प्रदान किया गया। और भी अधिक अंडशावकों के संग्रहण और प्रजनन के लिए आगे का प्रबंधन किया जा रहा है।



अंडयुक्त रेती महाचिंगट थीनस ओरिएन्टालिस



## कर्नाटक तट से मछलियों का वितरण प्रलेखन - 2011: सूची में 10 नई जातियाँ

कर्नाटक तट से वर्ष 2011 के दौरान विभिन्न कुटुम्बों की 10 मछली जातियों का संग्रहण करके इनकी पहचान की गयी। इस नए आविष्कार के साथ कर्नाटक की पख मछली विविधता 422 जातियाँ हो गयी।

- होराबाग्रस ब्राक्सोमा (गुन्थर, 1864)
- अलूटरास स्क्रिप्टस (ओसबेक, 1765)
- नियोहारियोटा पिन्नेटा (श्नाकेनबेक, 1931)
- कान्तिडेर्मिस माकुलेटा (ब्लोच, 1786)
- कालियोनिमस मारगरेटे (रीगन, 1905)
- ओस्टिकिस अकान्तोराइनस (रान्डल, शिमिसु एवं यमकावा, 1982)
- स्कोर्पिनोडस पारविपिन्सिस (गारेट, 1864)
- ऐसोपिया कोमुटा (काउप, 1858)
- एपोगोन क्वकेत्ती (गिलक्रिस्ट, 1903)
- टेरापोन टेराप्स (क्युवीर, 1829)

गुन्थेर्स कैटफिश  
स्क्रिबिल्ड लेथरजैकट फाइलफिश  
सिकिल फिन चिमेरा  
ओशियन ट्रिगरफिश  
मारगरेट्स ड्रागोनेट

स्पाइनस्नाउट स्कुरलफिश  
लोफिन स्कोरपियोनिफिश  
यूनिफोन सोल  
स्पोटफिन कर्दिनाल  
लार्ज स्केल्ड टेरापोन



ओशियन ट्रिगरफिश कान्तिडेर्मिस माकुलेटा  
(ब्लोच, 1786)



एपोगोन क्वकेत्ती गिलक्रिस्ट, 1903  
स्पोटफिन कर्दिनाल



होराबाग्रस ब्राक्सोमा (गुन्थर, 1864)  
लोफिन स्कोरपियोनिफिश

(श्री आर.शरवणन, सी एम एफ आर आइ  
मांगलूर अनुसंधान केंद्र की रिपोर्ट)

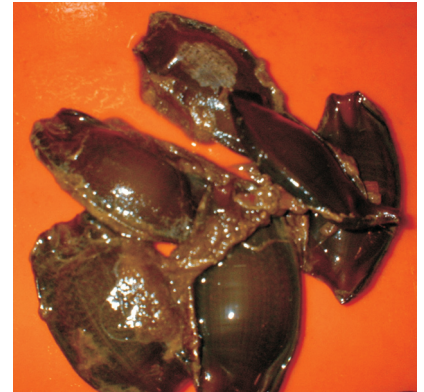
## कालिकट अनुसंधान केंद्र की जलजीवशाला में बाम्बू सुरा के प्रजनन एवं पालन पर परीक्षण

कालिकट अनुसंधान केंद्र के समुद्री अनुसंधान जलजीवशाला में अनुरक्षण करने के लिए अगस्त, 2009 के दौरान तिवकोडी कृत्रिम भित्ति क्षेत्र से बाम्बू सुरा, चैलोसीलियम ग्रीसियम के कुछ नमूनों को संग्रहित किया गया। सुराओं को प्रतिदिन खाद्य के रूप में स्वच्छ ठ्यूना मांस दिया गया। इन में 538-590 मि.मी. के आकार रेंच की कुछ सुराएं जुलाई, 2011 के दौरान जलजीवशाला टैंक में 38 अंड संपुटों (मेरमेडिड्स पर्स) को जन्म दिया और इन्हें स्फुटन के लिए टैंक में ही अनुरक्षित किया गया। पानी का विनियम और वातन से टैंक के पानी की गुणता कायम रखा गया। जलजीवशाला के पानी की गुणता इसी प्रकार है: पानी का तापमान 22.5<sup>0</sup> C से 28.2<sup>0</sup> C, लवणता 29.0 से 35.2 पी पी टी और पी एच 7.7 से 8.5. अंड संपुटों को निर्यंजित समुद्र जल और वातन होने वाले अलग एफ आर पी टैंक में अनुरक्षित किया गया। भ्रूण की बढ़ती जानने के लिए अंड संपुटों का आवधिक आकलन किया गया और सड़ गए अंडों को



बाम्बू सुरा का 12 दिन का किशोर

निकाल दिया गया। लगभग 118वां दिन से स्फुटन शुरू हुआ और 130 दिन तक जारी रहा। कुछ अंड संपुटों में छोटों को बाहर आने की आसानी के लिए संपुट का किनारा काट दिया। कुल मिलाकर 18 छोटी सुराएं प्राप्त हुई जिन्हें समुद्री अनुसंधान जलजीवशाला के एफ आर पी टैंक में किशोर अवस्था तक पालन



बाम्बू सुरा का अंड संपुट

किया गया। प्रारंभ में खाद्य के रूप में कतरे गए शंबु मांस और बाद में झींगा मांस दिया गया। किशोरों के साथ संलग्न पीतक याने कि योक 18वां दिन से लेकर किशोर सुराएं खाद्य लेने तक याने कि 24 दिन तक रहा।

(पी.पी.मनोज कुमार और पी.के.अशोकन,  
कालिकट अनुसंधान केंद्र की रिपोर्ट)

## कालिकट तट पर हरित ज्वार और मछली मृत्युता

कालिकट तट पर दिनांक 27.09.2011 से 17.10.2011 तक की अवधि के दौरान व्यापक रूप से और विभिन्न सांद्रता में कैटोनेल्ला मरीना (सुब्रमण्यन) की विषालू फुल्लिकाओं से हरित

ज्वार दिखाया पड़ा। अगले दिन से लेकर इन फुल्लिकाओं के प्रभाव से ओटोलिथस जाति, सयनोगलोसस जाति और लिज़ा जाति की अंगुलिकाओं और मोल केकडा एमरिता आसिएटा

की भारी मृत्युता देखी गयी। फुल्लिकाओं की उपस्थिति के चौदह दिन बाद हरित शंबु पेर्ना विरिडिस, माकूटा वयलेसिया, डोनाक्स स्क्रोटम और डोनाक्स कुनिएटस को मिलाकर कई द्विकपाटियों का नाश हो गया।



**डॉ. एम.वी.गुप्ता**, अध्यक्ष, आर ए सी, सी एम एफ आर आइ ने दिनांक 17-18 नवंबर, 2011 को सी एम एफ आर आइ मंडपम क्षेत्रीय केंद्र का मुआइना किया और कोबिया मछली के प्रजनन एवं संतति उत्पादन की प्रगति का निर्धारण किया।



डॉ. एम.वी.गुप्ता, अध्यक्ष, आर ए सी, सी एम एफ आर आइ मंडपम क्षेत्रीय केंद्र में मुआइना करते हुए

## मछुआरों के साक्षरता, स्वास्थ्य और आय के स्तर पर कार्यशाला

डी ए एच डी एवं एफ की निधिबद्धता की परियोजना मछुआरों के साक्षरता, स्वास्थ्य और आय का स्तर विषय पर सी एम एफ आर आइ द्वारा 17 और 18 नवंबर, 2011 को कोच्ची में दो दिवसीय कार्यशाला आयोजित की गयी और तीन तकनीकी सत्रों में परियोजना के परिणामों पर चर्चा की गयी।



## प्रदर्शनियाँ



हैदराबाद कनवेंशन सेन्टर में 20 से 22 नवंबर, 2011 के दौरान अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन एवं प्रदर्शनी 'फुड 3600' आयोजित की गयी।

तोडुपुषा में 26 दिसंबर, 2011 से 01 जनवरी, 2012 के दौरान 'कर्षकमेला' प्रदर्शनी आयोजित की गयी जिस में के.के.शंकरन, के.एन.पुष्करन, एन.के. हर्षन, के.एम. डेविड, पी.आर. अभिलाष, पी. वी. सुनिल और एम.टी. विजयन ने भाग लिया।





## विषिंजम अनुसंधान केंद्र में अलंकारी मछली पालन और प्रजनन के नवीनतम तकनीकों पर प्रशिक्षण

सी एम एफ आर आइ और एन एफ डी बी के संयुक्त सहयोग से सी एम एफ आर आइ विषिंजम अनुसंधान केंद्र में दिनांक 22 नवंबर से 01 दिसंबर, 2011 को अलंकारी मछली पालन और प्रजनन के नवीनतम तकनीक विषय पर प्रशिक्षण आयोजित किया गया। इस प्रशिक्षण कार्यक्रम में देश के विभिन्न भागों से लगभग बाईस सहभागियों ने भाग लिया। प्रशिक्षण में अलंकारी मछली प्रजनन

पर विशेष ध्यान देते हुए समुद्री अलंकारी मछली एवं अकशेरुकियों के पालन के विभिन्न पहलुओं जैसे मछली संग्रहण, परिवहन और जलजीवशाला अनुरक्षण के बारे में प्रशिक्षण दिया गया। श्री के.सोमराजन, प्रबंध निदेशक, मत्स्यफेड, केरल ने प्रशिक्षण कार्यक्रम का उद्घाटन किया। श्री राधाकृष्णन नायर, महाप्रबंधक, मत्स्यफेड, केरल ने मैनुअल का विमोचन किया। उद्घाटन कार्यक्रम में

डॉ. ए.पी. लिप्टन, केंद्र के प्रधान वैज्ञानिक अध्यक्ष रहे। डॉ. जी.गोपकुमार, अध्यक्ष, समुद्री संवर्धन प्रभाग, सी एम एफ आर आइ ने मुख्य भाषण दिया। मात्स्यकी विभाग, पत्तन एवं पोताश्रय के कई कार्मिकों के अतिरिक्त कुछ मछली पालनकारों, अनुसंधान छात्रों और आमंत्रित अतिथियों ने उद्घाटन कार्यक्रम में भाग लिया।



श्री के.सोमराजन, प्रबंध निदेशक, मत्स्यफेड उद्घाटन भाषण देते हुए



श्री राधाकृष्णन नायर, महाप्रबंधक, मत्स्यफेड प्रशिक्षण मैनुअल का विमोचन करते हुए

## तकनीकी कर्मचारियों के लिए कंप्यूटर प्रशिक्षण कार्यक्रम



संकाय सदस्यों के साथ प्रशिक्षणार्थी

संस्थान के 18 तकनीकी कार्मिकों के लिए मुख्यालय, कोचीन में 14 से 25 नवंबर, 2011 के दौरान फोटोशॉप, कोरल ड्रॉ और पेजमेकर पर कंप्यूटर प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया गया।

नवभारत फाउंडेशन की सहकारिता से सी एम एफ आर आइ द्वारा मुख्यालय में 10 से 19 नवंबर, 2011 के दौरान 15 भागीदारों के लिए जलजीवपालन पर प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया गया।







डॉ. प्रसन्न कुमार पाटसाणी, सांसद (लोक सभा) अंग्रेजी - हिंदी मात्स्यिकी शब्दावली का विमोचन करते हुए

## सी एम एफ आर आइ में संसदीय समिति द्वारा राजभाषा कार्यान्वयन का मूल्यांकन

संसदीय राजभाषा समिति की दूसरी उपसमिति ने दिनांक 29 अक्टूबर, 2011 को सी एम एफ आर आइ मुख्यालय, कोचीन के राजभाषा कार्यान्वयन गतिविधियों का निरीक्षण किया। डॉ. प्रसन्न कुमार पाटसाणी, सांसद (लोक सभा) निरीक्षण बैठक में अध्यक्ष रहे। श्री वाइ.पी.त्रिवेदी, सांसद (राज्य सभा), श्री किशनभाई वी.पटेल, सांसद (लोक सभा); समिति सचिवालय के डॉ. एल.आर.यादव, स्थानापन्न सचिव, डॉ. एस.पी. शुक्ला, अवर सचिव, श्री जी.एस.

रावत, हिंदी अधिकारी और श्री राजेश झा, रिपोर्टर भी बैठक में उपस्थित थे। कार्यालय पक्ष से डॉ. मदन मोहन, सहायक महानिदेशक (मा.) और श्री हरीश चन्द्र जोशी, निदेशक (राजभाषा), भा कृ अनु प; नई दिल्ली, डॉ.जी.सैदा रावु, निदेशक, श्री राकेश कुमार, मुख्य प्रशासनिक अधिकारी, श्री. आर.अनिल कुमार, प्रशासनिक अधिकारी, श्रीमती शीला पी.जे., सहायक निदेशक (रा भा), श्रीमती ई.के.उमा और श्रीमती ई.शशिकला, तकनीकी अधिकारी गण भी बैठक में उपस्थित थे।

### राजभाषा कार्यान्वयन

## मुख्यालय में जैवविविधता विषय पर राजभाषा संगोष्ठी

सी एम एफ आर आइ, कोचीन में दिनांक 10.10.2011 को जैवविविधता विषय पर राष्ट्रीय राजभाषा संगोष्ठी आयोजित की गयी। डॉ.एन.मोहनन, प्रोफसर, हिंदी विभाग, कोचीन विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय, कोचीन ने संगोष्ठी का उद्घाटन किया। अपने उद्घाटन भाषण में उन्होंने साहित्य और विज्ञान के पहलुओं और केंद्र सरकार कार्यालयों में कार्यनिष्पादन में हिंदी जहाँ तक सक्षम है आदि विषयों पर प्रकाश डाला। डॉ.जी.सैदा रावु, निदेशक, सी एम एफ आर आइ कार्यक्रम में अध्यक्ष रहे। डॉ. (श्रीमती) मेरी के. माणिशेरी, अध्यक्ष, समुद्री जैवविविधता प्रभाग एवं संगोष्ठी समायोजक ने सभा का स्वागत किया। डॉ.के.के.जोशी, वरिष्ठ वैज्ञानिक ने

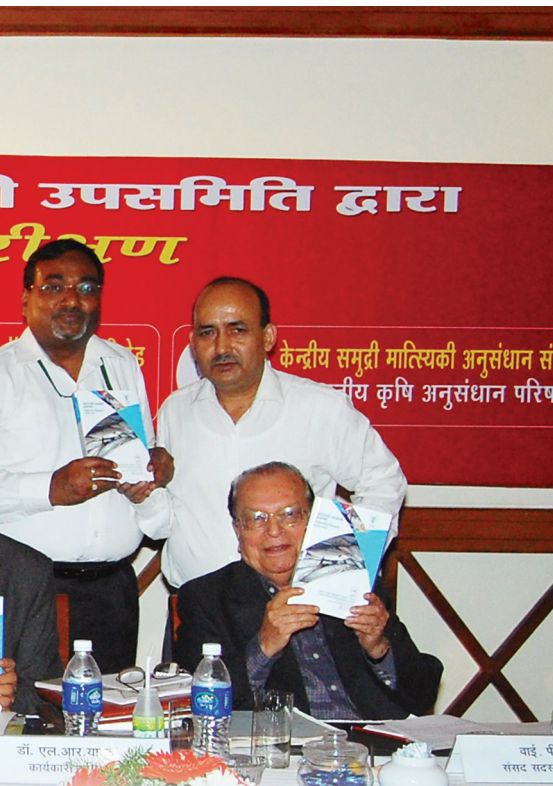


विशेष प्रकाशन का विमोचन



डॉ. एन. मोहनन उद्घाटन भाषण देते हुए





बैठक के प्रारंभ में डॉ. प्रसन्न कुमार पाटसाणी, समिति के आयोजक ने सी एम एफ आर आइ द्वारा तैयार की गयी मात्स्यिकी शब्दावली का विमोचन किया। समिति ने राजभाषा के प्रचार के लिए संस्थान द्वारा उठाए गए प्रयासों की सराहना की।

सी एम एफ आर आइ द्वारा अत्यंत सूचारु ढंग से किए गए समन्वयन कार्य पर भी समिति ने सराहना की।



लेख प्रस्तुतीकरण का दृश्य

विशेष प्रकाशन का परिचय किया और मुख्य अतिथि ने इसका विमोचन किया। श्रीमती शीला पी.जे., सहायक निदेशक (रा भा) ने कृतज्ञता अदा की।

संगोष्ठी में दो तकनीकी सत्रों में वैज्ञानिकों द्वारा अनुसंधान लेख प्रस्तुत किए गए। डॉ.ई.वी.राधाकृष्णन, अध्यक्ष, सी एफ डी

और डॉ.के.के.जोशी, वरिष्ठ वैज्ञानिक ने सत्रों की अध्यक्षता की। डॉ.वी.वी.सिंह, प्रधान वैज्ञानिक, डॉ.के.के.जोशी, वरिष्ठ वैज्ञानिक, डॉ.पी.एस.आशा, वरिष्ठ वैज्ञानिक, डॉ.लक्ष्मी पिल्लै, वैज्ञानिक और डॉ. बिन्दू सुलोचनन, वैज्ञानिक को उत्तम प्रस्तुतीकरण के पुरस्कार प्रदान किए गए।

## विशाखपट्टणम क्षेत्रीय केंद्र में हिंदी के प्रयोग पर कार्यशाला

विशाखपट्टणम क्षेत्रीय केंद्र में दिनांक 15 सितंबर, 2011 को प्रशासनिक एवं वैज्ञानिक कार्यों में हिंदी का प्रयोग विषय पर कार्यशाला आयोजित की गयी। श्री संतोष अलेक्स, हिंदी अधिकारी, सी आइ एफ टी विशाखपट्टणम अनुसंधान केंद्र ने हिंदी के प्रयोग पर केंद्र के कर्मिकों को क्लास आयोजित किया। कार्यशाला में प्रशासनिक, तकनीकी और वैज्ञानिक कर्मिकों को मिलाकर कुल तैंतीस कर्मचारियों ने भाग लिया।

केंद्र में सितंबर 20-24 के दौरान हिंदी

सप्ताह और 24 सितंबर को हिंदी दिवस आयोजित किया गया। हिंदी सप्ताह के दौरान विभिन्न प्रतियोगिताएं आयोजित की गयी। श्री वीरेन्द्र राय, वरिष्ठ प्रबंधक (राजभाषा), इंडियन बैंक, विशाखपट्टणम मुख्य अतिथि रहे। डॉ.पी.लक्ष्मीलता कार्यक्रम में अध्यक्ष रही। मुख्य अतिथि ने कर्मचारियों को अपने दैनिक कार्यों में कुछ हद तक हिंदी का प्रयोग करने के लिए प्रोत्साहित किया। प्रतियोगिताओं के विजेताओं को मुख्य अतिथि ने पुरस्कार प्रदान किए।

## मात्स्यिकी विज्ञान के क्षेत्र में वर्ष 1954 से लेकर प्रमुख इंडियन जर्नल



वर्षिक चंदा  
रु.1000/- \$100  
निदेशक, सी एम एफ आर आइ  
कोच्ची - 682 018 से संपर्क करें

## हिंदी कार्यशाला

सी एम एफ आर आइ मुख्यालय में 15 से 17 दिसंबर, 2011 के दौरान अनुसचिवीय और तकनीकी कर्मचारियों के लिए तीन दिवसीय हिंदी कार्यशाला आयोजित की गयी। हिंदी व्याकरण, टिप्पण और आलेखन तथा सरकारी पत्राचार विषयों पर क्लास चलाए गए।



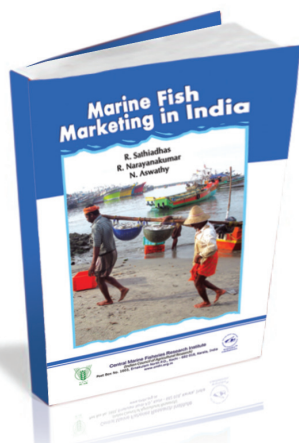
## सी एम एफ आर आइ के नए प्रकाशनों का विमोचन



डॉ.मोहन जोसफ मोडयिल भारत में समुद्री मछली विपणन नामक पुस्तक का विमोचन करते हुए



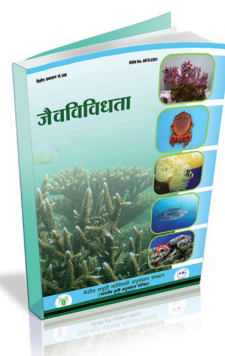
डॉ.डरेक स्टेपिल्स भारत के करंजिड्स नामक पुस्तक का विमोचन करते हुए



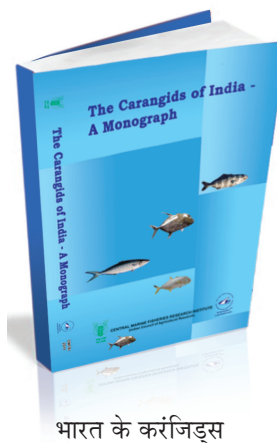
भारत में समुद्री मछली विपणन हार्डबाउन्ड, 276 पृ. रु.500/-



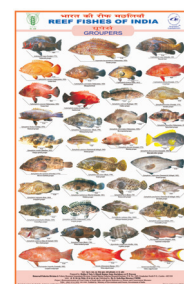
मत्स्यिकी शब्दावली अंग्रेजी-हिंदी, एच बी 297 पृ.



विशेष प्रकाशन सं. 106



भारत के करंजिड्स हार्डबाउन्ड, 437 पृ. 800/-



भारत की झाड़ी मछलियाँ-ग्रुपेस पर पोस्टर रु.50/-

## मनोरंजन क्लब की गतिविधियाँ



**सी** एम एफ आर आइ मंडपम क्षेत्रीय केंद्र के बिल्डिंग एवं सेक्यूरिटी सेक्शन और मनोरंजन क्लब संयुक्त रूप से कर्मचारी आवास समुच्चय के परिसर पर दिनांक 09 दिसंबर, 2011 को पेड रोपण कार्यक्रम आयोजित किया गया। डॉ.जी.गोपकुमार, प्रभारी वैज्ञानिक ने रोपण कार्यक्रम का नेतृत्व किया। कर्मचारी सदस्यों और उनके परिवार के सदस्यों ने सक्रिय रूप से रोपण कार्यक्रम में भाग लिया। सपोटा, ग्वावा, नारियल, करी के पत्ते के लगभग 200 छोटे पादपों का रोपण किया गया।

▶ डॉ.जी.गोपकुमार, प्रभारी वैज्ञानिक  
मंडपम क्षेत्रीय केंद्र पादप का रोपण करते हुए



**डॉ. जी.सैदा रावु**, निदेशक

- भा कृ अनु प शासी निकाय की बैठक 04.10.2011
- चेन्नई अनुसंधान केंद्र का मुआइना 02.11.2011

**डॉ. जी.गोपकुमार**, प्रभारी वैज्ञानिक एवं अध्यक्ष, समुद्री संवर्धन प्रभाग ने 19-20 सितंबर, 2011 को सेन्ट्रल इन्स्टिट्यूट फोर ड्राइलान्ड अग्रिकल्चर (क्रिडा), हैदराबाद में 'क्लाइमेट चेन्ज प्लेटफॉर्म' विषय पर आयोजित पणधारियों की चर्चा में भाग लिया।

- मात्स्यिकी कॉलेज एवं अनुसंधान संस्थान, टूटिकोरिन में 3 अक्तूबर, 2011 को आयोजित एन ए आइ पी कन्सोरशियम बैठक में भाग लिया।
- नई दिल्ली में 8 नवंबर, 2011 को माननीय कृषि मंत्री के साथ पशु विज्ञान एवं मात्स्यिकी के वैज्ञानिकों की बैठक में भाग लिया।

**डॉ. (श्रीमती) वी.कृपा**, अध्यक्ष, एफ ई एम डी

- श्री शरद पवार, केंद्र कृषि मंत्री और भा कृ अनु प के मात्स्यिकी एवं पशु पालन के अन्य संस्थानों के प्रतिनिधियों के साथ नई दिल्ली में 8 नवंबर, 2011 को आयोजित चर्चा में भाग लिया।
- नई दिल्ली में 19.09.2011 से 21.09.2011 तक परामर्श परियोजना - 'कूडमकुलम न्यूक्लियर पावर प्लान्ट के लिए समुद्री ई आइ ए अध्ययन' का अंतिम प्रस्तुतीकरण।
- सी आइ एफ ए, भुवनेश्वर में 22.09.2011 को आइ एम सी के सदस्य के रूप में सहभागिता।
- भा कृ अनु प अनुसंधान समुच्चय, गोवा में 27 सितंबर, 2011 को आइ एम सी सदस्य के रूप में सहभागिता।
- कासरगोड के पडमा में नबार्ड की परियोजना अनुवीक्षण एवं निरीक्षण समिति (पी एम आर सी) की बैठक में भाग लिया।
- सी एम एफ आर आइ विशाखपट्टणम क्षेत्रीय केंद्र में 28.09.2011 से 02.11.2011 तक टी यू एफ एफ एस परियोजना के अंदर प्रशिक्षण एवं कार्यशाला में भाग लिया।

**डॉ. विनय देशमुख**, प्रभारी वैज्ञानिक, मुम्बई अनुसंधान केंद्र

- राज्य में कोष संपाश मात्स्यिकी पर अध्ययन करने के लिए महाराष्ट्र सरकार द्वारा परामर्श समिति के सदस्य के रूप में नियुक्त किया गया।
- रत्नगिरी, मालवान, सासून डोक और पलघार में कोष संपाश समिति द्वारा आयोजित चार बैठकों में भाग लिया।
- दिनांक 15.11.2011 और 16.11.2011 को नीरी और बी ए आर सी, एम पी सी

## रॉम में एफ ए ओ मूल्यांकन टीम के सदस्य के रूप में डॉ.रामचन्द्रन

उत्तरदायित्वपूर्ण मात्स्यिकी की आचरण संहिता के कार्यान्वयन में एफ ए ओ की सहायता का मूल्यांकन करने के लिए आयोजित डॉ.मेरिल विल्यम्स के नेतृत्व के अंतर्राष्ट्रीय अध्ययन टीम के सदस्य के रूप में डॉ.रामचन्द्रन, वरिष्ठ वैज्ञानिक को प्रतिनियुक्त किया गया। अध्ययन मूल्यांकन के रूप में दिनांक 16 नवंबर से 4 दिसंबर, 2011 के दौरान उन्होंने एफ ए ओ मुख्यालय, रॉम और घाना का मुआइना किया।

**डॉ. ए.के.अब्दुल नासर**, वरिष्ठ वैज्ञानिक, **श्री सी.कालिदास**, वैज्ञानिक और **श्री रितेश रंजन**, वैज्ञानिक ने खारा पानी जलकृषि विकास केंद्र (बी ए डी सी), सिटुबोन्डो, ईस्ट जावा, इंडोनेशिया में 25 सितंबर से 15 अक्तूबर, 2011 के दौरान '7 वां क्षेत्रीय ग्रुपर स्फुटनशाला उत्पादन' विषय पर एन ए सी ए द्वारा प्रायोजित प्रशिक्षण पाठ्यक्रम में भाग लिया।



डॉ.ए.के.अब्दुल नासर, श्री सी.कालिदास, और श्री रितेश रंजन इंडोनेशिया में प्रशिक्षण के सहभागियों के साथ

बी, एम सी जी एम, बी आर एन एस, पर्यावरण एवं वन मंत्रालय, सी पी सी बी आदि के साथ 'जलवायु परिवर्तन: तेल रिसाव और रेडियेशन का जोखिम: नया पर्यावरणीय परिवर्तन' विषय पर आयोजित दो दिवसीय सम्मेलन में भाग लिया और मुम्बई तट के तेल रिसाव पर लेख प्रस्तुत किया।

**डॉ. जी.महेश्वरुडू**, प्रधान वैज्ञानिक एवं प्रभारी वैज्ञानिक, सी एम एफ आर आइ विशाखपट्टणम क्षेत्रीय केंद्र ने सी आइ एफ आर आइ, बैरकपुर, कोलकता में दिनांक 24 सितंबर, 2011 को भा कृ अनु प क्षेत्रीय समिति-11 की XX वीं बैठक पर उठाई गयी कार्यवाही की रिपोर्ट की मिड-टेम पुनरीक्षण बैठक में भाग लिया।

उन्होंने दिनांक 18 नवंबर, 2011 को हैदराबाद में आंध्र प्रदेश सरकार के सिंचाई एवं सी ए डी (लोक निर्माण विभाग) विभाग द्वारा आयोजित राज्य स्तरीय अनुवीक्षण समिति की दूसरी बैठक में भाग लिया।

**डॉ. वीरेन्द्र वीर सिंह**, प्रधान वैज्ञानिक

- एम एम पी एल परियोजना के अंदर दिनांक 18.10.2011 को भाटी में महाराष्ट्र राज्य के मछुआरों और मात्स्यिकी विभाग के कर्मिकों तथा सहायक आयुक्त, एम सी जी एम के साथ बैठक।

**डॉ. यू.गंगा**, वरिष्ठ वैज्ञानिक ने एन बी एफ जी आर, लखनऊ में दिनांक 18.10.2011 को जल:अनुसंधान प्राथमिकता विषय पर आयोजित राष्ट्रीय चर्चा में भाग लिया।

**डॉ. ई.एम.अब्दुसमद**, **डॉ. एम.शिवदास**, **श्री के.पी.सेयद कोया**, **डॉ. प्रतिभा रोहित** और **डॉ. शुभदीप घोष** ने चेन्नई में दिनांक 14-18 नवंबर 2011 को तटीय समुद्री ट्यूना की प्रथम आइ ओ टी सी (हिंद महासागर ट्यूना आयोग) बैठक में भाग लिया।

**डॉ. पी.के.अशोकन**, वरिष्ठ वैज्ञानिक ने मांगलूर मात्स्यिकी कॉलेज में 21 से 24 नवंबर, 2011 के दौरान एशियन जलकृषि में रोग विषय पर आयोजित 8वीं अंतर्राष्ट्रीय परिचर्चा में भाग लिया और पोस्टर प्रदर्शनी में समुद्री जैवप्रौद्योगिकी प्रभाग के दो वैज्ञानिकों के साथ उत्तम पोस्टर का पुरस्कार प्राप्त किया।

**डॉ. शुभदीप घोष**, वरिष्ठ वैज्ञानिक ने सी आर आइ डी ए, हैदराबाद में 19-20 सितंबर, 2011 के दौरान जलवायु परिवर्तन के परिदृश्य में पणधारियों की चर्चा कार्यक्रम में भाग लिया।

**डॉ. बी.जोनसन** ने एन ए एस सी समुच्चय, नई दिल्ली में 09-12 नवंबर, 2011 के दौरान 'विस्तार शिक्षा का अंतर्राष्ट्रीय संघ द्वारा कृषि ज्ञान प्रबंध: नवोन्मेषी अभिगम' विषय पर आयोजित अंतर्राष्ट्रीय परिचर्चा में भाग लिया।



## वरिष्ठ अधिकारियों को उनकी सेवानिवृत्ति पर सलामी

### डॉ. मेरी के.माणिशेरी की सेवानिवृत्ति

डॉ.(श्रीमती) मेरी के.माणिशेरी ने जनवरी, 1977 में भा कृ अनु प सेवा में कार्यग्रहण किया। डॉ.(श्रीमती) मेरी के.माणिशेरी ने सी एम एफ आर आइ में कार्यग्रहण करने से पहले टूटिकोरिन अनुसंधान केंद्र और सी एम एफ आर आइ का एन पी सी एल, नारक्कल में सेवा की।



उन को क्रस्टेशियन मात्स्यिकी प्रभाग में तैनात किया गया। वर्ष 2007 में उन्हें समुद्री जैवविविधता प्रभाग के अध्यक्ष के रूप में चयन किया गया और दिनांक 31.12.2011 को सेवानिवृत्ति तक उसी पद पर सेवा की। डॉ.(श्रीमती) मेरी के.माणिशेरी ने पिछले दो वर्षों के दौरान संस्थान के पी एम ई सेल के प्रभारी वैज्ञानिक के रूप में सराहनीय कार्य किया। उनके 60 से अधिक अनुसंधान लेख विभिन्न पत्रिकाओं में प्रकाशित किए गए।



डॉ.टी.एस.वेलायुधन

प्रधान वैज्ञानिक मुख्यालय, टी-6(तकनीकी अधिकारी)  
कोचीन  
30.11.2011  
को सेवानिवृत्त



श्री एस.पलनिचामी

मंडपम क्षेत्रीय केंद्र  
31.10.2011  
को सेवानिवृत्त



श्री पी.एम.हरिहरन

टी-5(डेकहेन्ड)  
मुख्यालय, कोचीन  
31.10.2011  
को सेवानिवृत्त



श्री एन.गोविन्दन

सहायक प्रशासनिक अधिकारी  
मांगलूर अनुसंधान केंद्र  
31.10.2011 को सेवानिवृत्त



श्रीमती आलीस वालूराम

सहायक, मुख्यालय, कोचीन  
30.11.2011  
को सेवानिवृत्त



श्री एस.मुत्तुमारी

सहायक, मंडपम क्षेत्रीय केंद्र  
31.12.2011 को  
सेवानिवृत्त



सुश्री एन.एम.पोत्रम्मा

उच्च श्रेणी लिपिक  
मुख्यालय, कोचीन  
31.12.2011 को सेवानिवृत्त



श्री के.टी.राजप्पन

एस एस एस  
मुख्यालय, कोचीन  
31.10.2011 को सेवानिवृत्त

### नियुक्तियाँ

नाम	पदनाम	केंद्र	प्रभावी तारीख
1. श्री फोफान्डी महेन्द्रकुमार डी.	टी-6(तकनीकी अधिकारी)	वेरावल क्षेत्रीय केंद्र	22.10.2011
2. श्री नीलेश अनिल पवार	टी-6(तकनीकी अधिकारी)	मुम्बई अनुसंधान केंद्र	20.10.2011
3. श्री विकास पी.ए.	टी-6(एस एम एस-मात्स्यिकी)	कृ वि कें, नारक्कल	07.12.2011(अपराह्न)
4. सुश्री भारदीय संगीता अरविनदकुमार	टी-3(तकनीकी सहायक)	वेरावल क्षेत्रीय केंद्र	18.10.2011
5. श्री वैभव दिनकर मात्रे	टी-3(तकनीकी सहायक)	मुम्बई अनुसंधान केंद्र	17.10.2011
6. श्री वी.अशोक महर्षि	टी-6(तकनीकी अधिकारी)	टूटिकोरिन अनुसंधान केंद्र	15.10.2011
7. श्री कोडी श्रीनिवास राव	टी-3(तकनीकी सहायक)	कारवार अनुसंधान केंद्र	21.11.2011
8. श्री मकवाना राजेशकुमार चन्दुभाइ	टी-1(क्षेत्र सहायक)	वेरावल क्षेत्रीय केंद्र	24.10.2011
9. श्री दुर्गा सुरेश रेलंगी	टी-1(क्षेत्र सहायक)	विशाखपट्टणम क्षेत्रीय केंद्र	17.10.2011
10. श्री करमत्तुल्ला साहिब	टी-1(क्षेत्र सहायक)	मांगलूर अनुसंधान केंद्र	05.12.2011

### स्थानांतरण

नाम व पदनाम	से	तक	प्रभावी तारीख
1. श्री एम.अम्बरशु, टी-3 (तकनीकी सहायक)	वेरावल क्षेत्रीय केंद्र	मंडपम क्षेत्रीय केंद्र	31.10.2011
2. श्री पी.राजेन्द्रन, टी-1 (क्षेत्र सहायक)	मद्रास अनुसंधान केंद्र	मंडपम क्षेत्रीय केंद्र	01.11.2011
3. श्रीमती वी.जयलक्ष्मी, सहायक	मुम्बई अनुसंधान केंद्र	मुख्यालय	16.11.2011
4. श्री अगस्टस जूलिन राज, सहायक	कारवार अनुसंधान केंद्र	मुम्बई अनुसंधान केंद्र	08.12.2011

### आपसी स्थानांतरण

नाम व पदनाम	से	तक	प्रभावी तारीख
1. श्रीमती के.वी.सुशीला, नि श्रे लि	सी एम एफ आर आइ टूटिकोरिन अनु. केंद्र	सी आइ एफ टी, कोचीन	24.09.2011
2. श्रीमती आर.आनन्दराणी, नि श्रे लि	सी आइ एफ टी, कोचीन	सी एम एफ आर आइ टूटिकोरिन अनु. केंद्र	27.09.2011



डॉ.बी.जोन्सन, वैज्ञानिक इन्डियन सोसाइटी ऑफ एक्स्टेंशन एज्यूकेशन (आइ एस ई) द्वारा जवहरलाल कृषि विश्व विद्यालय, जबलपुर (म.प्र.) में दिनांक 27-29 सितंबर, 2011 के दौरान 'ग्रामीण घरेलू आय वर्धन के लिए नवोन्मेषी विस्तार अभिगम' विषय पर आयोजित राष्ट्रीय संगोष्ठी में कुलपति, जवहरलाल कृषि विश्व विद्यालय, जबलपुर (म.प्र.) से उत्तम लेख प्रस्तुतीकरण का पुरस्कार ग्रहण करते हुए।



पदोन्नतियाँ				
नाम	पदोन्नत	केंद्र	प्रभावी तारीख	
1. श्रीमती के.शान्ता	सहायक	सहायक प्रशासनिक अधिकारी	विधिजम अनुसंधान केंद्र	11.10.2011
2. श्री ए.यागपन	सहायक	सहायक प्रशासनिक अधिकारी	मंडपम क्षेत्रीय केंद्र	01.11.2011
3. श्रीमती सी.ए.लीला	उच्च श्रेणी लिपिक	सहायक	मुख्यालय, कोचीन	09.11.2011
4. श्रीमती के.बालामणी	उच्च श्रेणी लिपिक	सहायक	कालिकट अनुसंधान केंद्र	09.11.2011
5. श्रीमती मंजुषा जी.मेनोन	उच्च श्रेणी लिपिक	सहायक	मुख्यालय, कोचीन	09.11.2011
6. श्री सुनिल ए.टी.	निम्न श्रेणी लिपिक	उच्च श्रेणी लिपिक	मुख्यालय, कोचीन	03.12.2011
7. श्री जोसफ मात्तू	निम्न श्रेणी लिपिक	उच्च श्रेणी लिपिक	मुख्यालय, कोचीन	03.12.2011
8. श्री एम.पी.मोहनदास	एस एस एस	टी-1 (क्षेत्र सहायक)	मुख्यालय, कोचीन	14.10.2011
9. श्री टी.वी.षाजी	एस एस एस	टी-1 (क्षेत्र सहायक)	मुख्यालय, कोचीन	14.10.2011
10. श्री वी.जोसफ सेवियर	एस एस एस	टी-1 (क्षेत्र सहायक)	मद्रास अनुसंधान केंद्र	14.10.2011
11. श्री एस.मुरुगभूपति	एस एस एस	टी-1 (क्षेत्र सहायक)	मंडपम क्षेत्रीय केंद्र	14.10.2011
12. श्री एन. रामकृष्णन	एस एस एस	टी-1 (क्षेत्र सहायक)	मंडपम क्षेत्रीय केंद्र	14.10.2011
13. डॉ. फालगुनी पटनाइक	टी-5(तकनीकी अधिकारी)	टी-6(तकनीकी अधिकारी)	विशाखपट्टणम क्षेत्रीय केंद्र	31.07.2010
14. डॉ.(श्रीमती)मधुमिता दास	टी-5(तकनीकी अधिकारी)	टी-6(तकनीकी अधिकारी)	विशाखपट्टणम क्षेत्रीय केंद्र	25.05.2010
15. डॉ. विश्वजीत दास	टी-5(तकनीकी अधिकारी)	टी-6(तकनीकी अधिकारी)	विशाखपट्टणम क्षेत्रीय केंद्र	25.05.2010
16. श्री के.राम मोहन	टी-5(तकनीकी अधिकारी)	टी-6(तकनीकी अधिकारी)	विशाखपट्टणम क्षेत्रीय केंद्र	01.07.2009
17. श्री जी. सुब्बुरामन	टी-4(व.तकनीकी सहायक)	टी-5(तकनीकी अधिकारी)	मंडपम क्षेत्रीय केंद्र	01.01.2011
18. श्री पी.वेंकटकृष्ण राव	टी-4(व.तकनीकी सहायक)	टी-5(तकनीकी अधिकारी)	पुरी क्षेत्र केंद्र	03.02.2010
19. श्री जी.श्रीनिवासन	टी-4(व.तकनीकी सहायक)	टी-5(तकनीकी अधिकारी)	मद्रास अनुसंधान केंद्र	01.01.2011
20. श्री वानवी जयंतिलाल दयाभाइ	टी-3(तकनीकी सहायक)	टी-4(व.तकनीकी सहायक)	वेरावल क्षेत्रीय केंद्र	01.07.2010
21. श्री जी.सुधाकर	टी-3(तकनीकी सहायक)	टी-4(व.तकनीकी सहायक)	ऑगोल क्षेत्र केंद्र	02.05.2010
22. श्री डी.जी.जाधव	टी-3(तकनीकी सहायक)	टी-4(व.तकनीकी सहायक)	मुम्बई अनुसंधान केंद्र	01.07.2009
23. श्री यू.जयराम	टी-3(तकनीकी सहायक)	टी-4(व.तकनीकी सहायक)	ट्रिटकोरिन अनुसंधान केंद्र	03.07.2010
24. श्री एस.मोहम्मद सताकतुल्ला	टी-3(तकनीकी सहायक)	टी-4(व.तकनीकी सहायक)	ट्रिटकोरिन अनुसंधान केंद्र	01.01.2010
25. श्री ठाकुर दास	टी-3(तकनीकी सहायक)	टी-4(व.तकनीकी सहायक)	मुम्बई अनुसंधान केंद्र	02.05.2010
26. श्री ए.अनसुकोया	टी-3(तकनीकी सहायक)	टी-4(व.तकनीकी सहायक)	कालिकट अनुसंधान केंद्र	10.05.2010
27. श्री एम.एम.भास्करन	टी-3(तकनीकी सहायक)	टी-4(व.तकनीकी सहायक)	कालिकट अनुसंधान केंद्र	01.01.2011
28. श्री सुरेश कृष्ण राव काम्बले	टी-2(क.तकनीकी सहायक)	टी-3(तकनीकी सहायक)	मुम्बई अनुसंधान केंद्र	01.01.2010
29. श्री वाइ.वी.एस.सूर्यनारायणा	टी-2(क.तकनीकी सहायक)	टी-3(तकनीकी सहायक)	विशाखपट्टणम क्षेत्रीय केंद्र	03.07.2010
30. श्री एन.भूमिनाथन	टी-2(क.तकनीकी सहायक)	टी-3(तकनीकी सहायक)	मंडपम क्षेत्रीय केंद्र	16.12.2010
31. श्री पी.एस.अलौषियस	टी-2(क.तकनीकी सहायक)	टी-3(तकनीकी सहायक)	मुख्यालय, कोच्ची	25.10.2010
32. श्री सी.चन्द्रन	टी-2(क.तकनीकी सहायक)	टी-3(तकनीकी सहायक)	कालिकट अनुसंधान केंद्र	01.02.2011
33. श्री वी.राजु	टी-2(क.तकनीकी सहायक)	टी-3(तकनीकी सहायक)	विधिजम अनुसंधान केंद्र	14.09.2010

प्रतिनियुक्ति			
नाम व पदनाम	से	तक	प्रभावी तारीख
1. श्री वानवी मनसुखलाल माधवजी, उच्च श्रेणी लिपिक	वेरावल क्षेत्रीय केंद्र	सहायक नैशनल रिसर्च सेन्टर ओन सीड स्पाइसेस, अजमेर, राजस्थान	05.12.2011

अनिवार्य सेवानिवृत्ति			
नाम	पदनाम	केंद्र	प्रभावी तारीख
1. श्री टी.तनंजयन	एस एस एस	सी एम एफ आर आइ का कोवलम क्षेत्र केंद्र, चेन्नई	27.09.2011

बैठक	
संस्थान प्रबंध समिति की 72वीं बैठक 24 नवंबर, 2011 को सी एम एफ आर आइ, कोचीन में आयोजित की गयी.	

## निधन

सी एम एफ आर आइ परिवार के श्री वी.पी.उणिक्कृष्णन और श्री पी.नारायण नाइक के निधन पर श्रद्धांजली



**श्री वी.पी.उणिक्कृष्णन**  
सहायक वित्त एवं लेखा अधिकारी  
विशाखपट्टणम क्षेत्रीय केंद्र  
19.12.2011



**श्री पी.नारायण नाइक**  
टी-2 (मोटर ड्राइवर)  
मांगलूर अनुसंधान केंद्र  
02.11.2011



# 9th Indian Fisheries Forum

Renaissance in Fisheries: Outlook and Strategies

19-23 December 2011, Chennai

Hosted by CENTRAL MARINE FISHERIES RESEARCH INSTITUTE, KOCHI



10वीं इंडियन फिशरीस फोरम वर्ष 2014 में  
राष्ट्रीय मत्स्य आनुवंशिकी संसाधन ब्यूरो,  
लखनऊ में आयोजित की जाएगी.

## कडलमीन

सी एम एफ आर आई समाचार

कडलमीन, सी एम एफ आर आई समाचार केन्द्रीय समुद्री मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान, कोचीन का तिमाही प्रकाशन है। यह प्रकाशन तिमाही के दौरान संस्थान की प्रमुख कार्यविधियों पर विवरण देने के साथ साथ अनुसंधान क्षेत्र की नई गतिविधियों और सफलताओं पर प्रकाश डालता है और प्रौद्योगिकी जानकारी को मछुआरा समुदाय तक विकीर्णन करता है।

एफ एफ एफ  
के सफल  
का टीम  
आयोजन के पीछे

